ख़ामोश निगाहें

(दास्तान-ए-मुहब्बत)

'साथी' जहानवी

(अजय कुमार शर्मा)

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि
साहित्य जन-जन के लिए

बोधि प्रकाशन
सी-46, सुदर्शनपुरा इंडस्ट्रियल एरिया एक्सटेंशन
नाला रोड, 22 गोदाम, जयपुर-302006
दूरभाष : 0141-2213700, +91-9829018087
ई-मेल : bodhiprakashan@gmail.com

कॉपीराइट © अजय कुमार शर्मा

प्रथम संस्करण : दिसम्बर, 2018

ISBN : 978-93-88167-88-8

कम्प्यूटर ग्राफिक्स : बनवारी कुमावत 'राज'

आवरण संयोजन : बोधि टीम

मुद्रक
तरु ऑफसेट, जयपुर # 09829018087

मूल्य : ₹ 120/

KHAMOSH NIGAHEN (GHAZAL) by 'Sathi' Jahanavee (Ajay Kumar Sharma)

समर्पित

समर्पित है उस निर्मल और पवित्र प्यार को
जो हर-पल रोम-रोम में हमेशा विद्यमान है
जो प्रतीक है मीरा, राधा-कृष्ण के रिश्तों का
जो मिसाल है हीर औ रांझा के सम्बन्धों का
जिसमें घर और परिवार होने का अहसास है
जिसमें बेशुमार प्यार की चाहत व क़शिश है
जिसमें एक दूसरे की ज़रूरतों के जज़्बात हैं
जिसमें तन-मन के संसार होने के विश्वास है
जिसमें विचारों का इज़हार, इक़रार व क़रार है
जिसमें दिल से बेहिसाब बेख़ुदी का आलम है
जिसमें सतरंगी सावन व बसंत का मधुमास है
जिसमें शमा व परवाने की क़ुदरती कायनात है
जिसमें दिल की पुकार में सगुन की शहनाई हैं
जिसमें रस्मों औ रिवाज़ों के तीज व त्यौहार हैं
जिसमें विरह की वेदना मे मिलन की मुरादें हैं
जिसमें प्यार के अजर-अमर होने की कामना है
जिसमें सदियों तक साथ रहने की ख़्वाहिशें हैं
जिसमें प्यार एक साधना, उपासना, आराधना है
जिसमें मन की वीणा के मधुर गीत-संगीत है
जिसमें मुश्क़िल वक़्त में सहयोग की भावना है
जिसमें करवा चौथ के व्रत, सावन के सोमवार हैं
जिसमें एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान है
जिसमें प्रेम की हिफ़ाजत में दिल से दुआयें हैं
जिसमें हर हालात में एक-दूसरे पर ऐतबार है
जिसमें सुहाग के सिंदूर, सात वचन के बंधन है
जिसमें मिलन की तमन्ना ख़ुदा की इबादत है
जिसमें चराग़ों की रोशनी बनने की भावना है
जिसमें प्यार की ख़ुशी में शजर का चिन्तन है
जिसमें प्यार इन्सान के लिए हवा औ पानी है
जिसमें तन व मन के भाव का ईश्वरीय बोध है।

अनुक्रम

बेताब मुहब्बत	21
प्यार में ऐसा भी	22
प्यार एक साधना	23
मुहब्बत का मज़हब	25
मासूम मुहब्बत	26
मुहब्बत में ऐसा भी	27
बेशुमार मुहब्बत	29
ख़ुशनसीब मुहब्बत	30
बेरहम इन्सानियत	31
उजाले अन्धेरे की ओर	33
दीवानगी में दीवाना	34
मुहब्बत का अफ़साना	36
लाचार मुहब्बत	37
बेइन्तहा दीवानगी	38
ऐसा क्यों नहीं	39
मुहब्बत ही सब कुछ	41
साथी का साथ	42
हालाते-इश्क़	43
वैसे ही बनते जायेंगे	44
अगर ऐसा हो तो	46
दोस्त और दुश्मन	47
अफ़सोस है कि	48
बेपनाह इश्क़	49
तेरे नाम कर जायेंगे	50
सब कुछ मुमकिन	51
ज़िन्दगी का फलसफ़ा	52
अमर प्रेम	53
मुहब्बत का फलसफ़ा	54
ख़यालों का अहसास	55
मुहब्बत के अहसास : एक	56
मुहब्बत के अहसास : दो	57
मुहब्बत के अहसास : तीन	58
मुहब्बत के अहसास : चार	59
त्यौहार के जज़्बात	60
नाइन्साफ़ी : एक	61
नाइन्साफ़ी : दो	62
प्यार ही सब कुछ	63
मुहब्बत के अहसास का असर	64
मुहब्बत की अहमीयत	66
मुहब्बत का अहसास	67
मुहब्बत का मज़हब	68
मुहब्बत दरिया की रवानी	69
तक़रार में प्यार : एक	70
तक़रार में प्यार : दो	71
प्यार में	72
मुहब्बत का सिला	74
दिल से प्यार	75
फिर कुछ भी नहीं	76
कुछ भी नहीं	77
बदहाल मुहब्बत	78
नासमझ	79
दास्ताने-मुहब्बत	80

तासीर-ए-मुहब्बत	81
विरह की वेदना	82
पानी जैसा प्यार	83
मुहब्बत ही ज़िन्दगी	85
ख़ूबसूरत अहसास	86
एक-दूजे के लिये	87
मुहब्बत का नज़रिया	88
जाँ निसार मुहब्बत	89
ख़ुशहाल मुहब्बत	90
मयार-ए-मुहब्बत : एक	91
मयार-ए-मुहब्बत : दो	92
कोई तो हो	93
मुहब्बत के अरमान	95
मुहब्बत एक इबादत	96
प्यार का असर : एक	98
प्यार का असर : दो	99
मुहब्बत का जुनून	100
इश्क़ में क्या हो जाते हैं	102
बदनसीब मुहब्बत	103
सिर्फ़ और सिर्फ़	105
मुहब्बत के दीनो-ईमान	107
क्या से क्या हो गये	108
क्या हो गया है	110
क्यों हो गया है	111
बदहाल प्यार	112
बदनसीब मुहब्बत	113
मुहब्बत ऐसी हो जाये	114
प्यार ही ज़िन्दगी	116
नादान मुहब्बत	118
त्यौहार के अहसास	120
प्यार बन कर	121
ऐसा भी हो सकता है	122
प्यार ऐसे निभाना है	124
मुहब्बत कमाल करती है	125
जब ऐसा नहीं है	127
कैसे प्यार हूँ मैं	128

मुहब्बतों का मतवाला शायर 'साथी' जहानवी

जहाँ शब्द की रचनात्मक अभिव्यक्ति को कविता कहा जाता है वहीं साहित्य को समाज का आईना भी बताया गया है। समाज में आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक एवं साहित्यिक स्थितियाँ होती ही हैं, जिनकी वज़ह से अनेक समस्यायें उत्पन्न हो जाती है। साहित्यकार चूँकि संवेदनशील होता है इसलिये वह इन समस्याओं से विचलित हो उठता है और अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को अवगत, जागृत करता रहता है। इसके लिये साहित्यकार अपने सामर्थ्य के अनुसार शब्दों का, मुहावरों का, प्रतीकों और उपमाओं का सहारा लेता है ताकि वह अधिक प्रभावशाली तरीके से अपनी बात कह सके।

प्रेम या मुहब्बत का दायरा बहुत व्यापक है। प्रेम परक विषयों पर लिखी गई रचनायें अपना अलग महत्त्व रखती हैं। संवेदनहीन होते हुये इस समाज में प्रेम या मुहब्बत से ही आपसी सद्भाव और भाईचारे का माहौल बन सकता है। प्रेम के रास्ते से ही हम दुनिया भर की छोटी-बड़ी समस्याओं का हल प्राप्त कर सकते हैं और इसी के रास्ते ईश्वर को भी प्राप्त किया जा सकता है। इसी सन्दर्भ में हमारे नगर के चर्चित कवि व शायर अजय कुमार शर्मा 'साथी' जहानवी अपने काव्य संग्रह 'ख़ामोश निगाहें' (दास्ताने-मुहब्बत) लेकर आपके सामने हाज़िर हैं। 'साथी' जहानवी अपने इस काव्य संग्रह में प्रेम परक विषयों के माध्यम से अपने जीवन के अनुभवों को आम लोगों तक पहुँचाने की पूरी क़ोशिश करते हुये नज़र आयेंगे। 'साहिर' ने क्या खूब लिखा है-

दुनिया ने तजुर्बातों-हवादिस की शक़्ल में
जो कुछ मुझे दिया है वो लौटा रहा हूँ मैं

मैं ऐसा समझता हूँ कि मौजूदा जीवन शैली ने हमारी साहित्यिक सक्रियता को

एक हद तक कम कर दिया है। हम ज़माने के साथ आगे तो बढ़ रहे हैं मगर साहित्य से दूर होते जा रहे हैं। हमारे पास कड़वे-मीठे अनुभव तो होते हैं मगर उनको रचनात्मक अभिव्यक्ति देने के लिये समय नहीं होता। किसी भी रचनाकार के लिये लिखना-लिखाना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। जो लिखा गया है वह उच्च स्तर का ही हो ये ज़रूरी नहीं, मगर वो लिखने के लिये निरन्तर प्रयासरत रहे ऐसा उसके हाथ में है। हमारे 'साथी' जहानवी भी निरन्तरता के साथ लेखन प्रक्रिया से जुड़े हुये साहित्यकार हैं। उनकी 18 पुस्तकों का प्रकाशित हो जाना अपने आप में उपलब्धि है। मैं उनकी सक्रियता को सलाम करता हूँ।

पेशे-नज़र काव्य संग्रह 'ख़ामोश निगाहें' में 'साथी' जहानवी प्रेम परक विषयों के माध्यम से छन्दानुशासन तोड़ते हुये भी अश्आर की सूरत में अपनी रचनायें पेश करते हैं। 'साथी' जहानवी मानते हैं कि वह ग़ज़ल कहना चाहते हैं। मैं भी ऐसा समझता हूँ कि उनकी ये रचनायें ग़ज़ल विद्या के ही सबसे निकट होकर गुज़रती हैं। मिसाल के तौर पर इसी काव्य संग्रह से कुछ अश्आर आपके सामने रखता हूँ-

सच को कैसे सच लिखूँ कि उसे सच ही लगे
उसके दिल में मेरी शायरी झूठ का निशान है

× × ×

ज़हर की तासीर में 'साथी' जब से अमृत है
बेपनाह मुहब्बत से भी यह दिली नफ़रत है

× × ×

नाक़ाबिले-बर्दाश्त ख़ता के लिये भी यह दुआ
ख़ुदा माफ़ करना इश्क़ में अभी वो नादान है

× × ×

जीवन के चिन्तन का यही मंथन है
मन के चरखे पे प्यार की कपास है

× × ×

ये कैसी ज़िन्दगी यह कैसी मौत 'साथी'
सारी की सारी कायनात ही शर्मसार है

ज़िन्दा रिश्ते बेज़ान हो कर न रह जायें
चमन के फूलों को क़ब्रे-फूल मत करना

× × ×

मुहब्बत है तो क्या उसका यही अन्ज़ाम होगा
दरिया के दो किनारे एक हो कर भी जुदा हैं

× × ×

चाँद थाली में ही सही मगर मेरा है
मुहब्बत इतनी नादाँ औ' समझदार है

× × ×

सिर्फ़ दिल ही तो काफ़ी नहीं
दिल की धड़कन कोई तो हो

× × ×

प्यार को महफ़ूज़ रखने का ऐसा जुनून
अपना सब तबाह करके भी हिफ़ाज़त है

× × ×

मैं ज़िन्दा हो कर भी तो एक मुर्दे के समान हूँ
अपने नाम के साथ दफ़्न करके ज़िन्दा कर दो

× × ×

एक दूसरे से लड़कर रुसवा होने से तो बेहतर
हम ख़ुद से लड़कर मुहब्बत पर कुर्बान हो जायें

इन अश्आर को पढ़ने के बाद अगर हम थोड़ा गौर करें तो पायेंगे कि जो माहौल है, लहज़ा और भाषा है, शैली है, सौन्दर्य और ख़ुश्बू है वो सब ग़ज़ल के अनुकूल है।

'ख़ामोश निगाहें' की रचनायें घर-परिवार की बातें करती हुई हमें मुहब्बत का पैग़ाम देती हैं। 'साथी' जहानवी आस-पास के परिवेश पर गहरी नज़र रखते हैं। उनके यहाँ श्रृंगार के साथ-साथ अन्याय और अत्याचार के प्रति ग़मो-गुस्सा भी है और मज़लूमों के लिये हमदर्दी भी, उनके सीने में एक दर्दमन्द इन्सान का दिल है। मुहब्बत

के ऐसे मतवाले शायर से हमें इसके सिवा और क्या मिल सकता है। 'साथी' जहानवी के इस जज़्बे की क़द्र होनी चाहिये। मज़रूह साहब के इस शे'र के साथ बात समाप्त करता हूँ।

उनका जो काम अहले-सियासत जाने
अपना पैग़ाम मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे

-शकूर अनवर

शमीम मंजिल, सेठानी चौक
श्रीपुरा कोटा-324006
मो. : 9460851271

अभिमत

झील जैसे नीले नयनों में नज़ारा निराला है
गुलाबी गालों पर रसीले होठों का प्याला है
अंग-अंग और रोम-रोम प्यार में नशीला है
प्रेम के अहसास से जीवन एक मधुशाला है

कुछ इसी तरह के जज़्बात अजय शर्मा 'साथी' जहानवी के काव्य संकलनों में हैं। इनकी काव्य यात्रा का कल्पना लोक असामान्य है। वे मुहब्बत में गहरे पैठ कर लिखते हैं। मुख्य रूप से उनके कलाम में शहरी मध्यमवर्गीय जवान मुहोब्बतियों की आप बीती प्रेमालापी मालिकायें हैं। उनकी पोथियों में सबका केन्द्रीय विषय मुहब्बत या प्यार ही है। वे केवल प्रेम से अपनी रचनाओं की शुरूआत करते हैं और प्रेम पर विराम देते हैं, वो प्रेमी जो प्यार में ज़िन्दगी बिता देने को ही प्रतिबद्ध है फिर भी प्राथमिकतायें बदलते हैं, प्रेम को बीत जाने देते हैं। उनकी निग़ाह में इश्क़ एक नकचढ़े तिफ़्ल (बच्चा) की मानिन्द है, जब तक गोद में उठाये हुये दुलराते, हिलराते रहो तब तक ख़ुशियों के असबाब से मालामाल कर देगा लेकिन जैसे ही गोद से उतारो चिचियाने लगेगा, मिमियाने लगेगा और शर्मसार कर देगा आपको। 'साथी' अपने सहयात्री के बारे में कुछ ऐसा ही अपनी पुस्तकों में यहाँ-वहाँ बयाँ कर देते हैं।

जैसे मैंने अपने कथन में पूर्व में उनके कलाम का नमूना पेश किया है उसे पढ़ कर आपको लगा होगा कि वह अनेक बार दर्शन में खो जाते हैं, अनेक उपमान और उपमाओं का इस्तेमाल करते हैं, पूरी तरह डूब जाते हैं, खो जाते हैं, सराबोर हो जाते हैं, शब्द चमत्कार के फेर में उलझ जाते हैं लेकिन भटकते नहीं, बस यही उनकी लेखनी की विशेषता है। यहाँ मुहोब्बत के मैदान में उनकी प्रवृति पलायनवादी नहीं है। लौटकर आना ही प्रकृति का धर्म है। उनकी रचना धर्मिता में आपको कुछ नया नहीं लगेगा। कुछ अजूबा नहीं लगेगा वही जो कुछ समाज में गुज़रता आया है गुज़र रहा है और भविष्य में भी गुज़रता रहेगा। अगर मैं सच कहूँ तो बात दरअसल ये है कि आप

नया चाहते ही कब हैं। आपने तो उसे ही मक़बूल (लोकप्रिय) किया है जो आपकी अपनी बीती कह सके। इस बात को देखते हुये 'साथी' जहानवी अपनी बात कहने में सफल रहे हैं। वे प्यार की लजीज़ी और उसकी शुष्कता के पैमाने को समान रखते हुये अपनी कविताओं को अन्ज़ाम तक पहुँचाने में सफल रहे हैं। कविताओं का प्रवाह लहलहाते चमन में खिले फूलों की ख़ुश्बू में लिपटा हुआ एक मंज़र सा लगता है जिसमें ख़रामा-ख़रामा (धीरे-धीरे) गुज़रने को दिल करता है। कहीं किसी प्रकार की जल्दी, ऊब कर निकलने को जी नहीं करता। कविताओं में प्रेम के अलावा भी समाज है, रिश्ते हैं, प्रकृति है,पूरी कायनात है, मिलन और बिछोह है, तिरस्कार है, तक़रार है, समर्पण है, शीत ऋतु की ताज़गी है, ग्रीष्म की चिलचिलाहट ये सभी घटक मिलकर पुस्तक के कलेवर को पठनीय बनाने में सहायक सिद्ध हुये हैं।

यह बहुत बड़ी बात है कि आज के इस दौर में प्यार पच ही कहाँ पाया है। उस पर विकराल काल की गहरी छाया है कि 'साथी' जहानवी ने इस तिजारती(पूँजीवादी) युग में भी उसे सहेज कर रखा है। ये श्लाघनीय(प्रसंशनीय) है। आस-पास की दुनिया से उठाये हुये इनके बिम्ब। लगता है जैसे सब सुने हैं, देखे हैं, अनुभव किये हैं। वही प्रेम की चालबाज़ियाँ, बेवफ़ाई, इज़हारे मुहब्बत, ख़ुद को कोसना, ख़त, आँसू, सब-कुछ वैसा का वैसा जो आप महसूस करते हैं, आपसे अलग नहीं। दिल को रूमानियत की ख़ुराक देनी है तो पढ़िये 'साथी' के कलाम।

अन्त में आप पायेंगे कि वे इस इश्क़ के दरिया में, उसकी अतुल गहराई में डूब कर जाना चाहते हैं जहाँ दरिया की लहरों के बाद एक सख़्त ज़मीन भी है जहाँ वे अपने को स्थाई रूप से अडिग हो कर खड़ा होना चाहते हैं। बक़ौल ग़ालिब:-

ये इश्क़ नहीं आसाँ, इतना तो समझ लीजे
इक आग का दरिया है, और डूब के जाना है।

आपका अपना

-भगवत सिंह जादौन 'मयंक'
(सेवानिवृत व्याख्याता एवं वरिष्ठ साहित्यकार)
346, लक्ष्मण मार्ग, सरस्वती कॉलोनी, खेडली फाटक, कोटा-324001
मो. : 9414390988, 9057579203

दिली गुफ़्तगू

(जज़्बात-ए-साथी)

11 जनवरी 2015 को एक साथ पाँच काव्य संग्रहों बेगुनाही के सुबूत, सहरा में शजर, समन्दर में बारिश, सावन में पतझड़, कैंसर के पाँचवें हालात और website www.xyzsathi.com और दिनांक 16 अप्रैल 2017 को एक साथ छह रूमानियत काव्य संग्रह ओह! मेरे मधुर प्यार, विरह की वेदना, दिल की पुकार, मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा, मन का संसार और बेजुबान तसव्वुर के मंजरे-आम (विमोचन) के बाद सात काव्य संग्रह जिसमें से पाँच रूमानियत काव्य संग्रह तन्हाई के तसव्वुर, मुहब्बत एक इबादत, ख़ामोश निग़ाहें, जुदाई के जज़्बात, मुहब्बत का साया और दो सामाजिक काव्य संग्रह 'अमावस का चाँद' और 'क़तरा-क़तरा दरिया' आपकी नज़र कर रहा हूँ।

गुज़िश्ता वक़्त में शायरी अपने महबूब से गुफ़्तगू का ज़रिया हुआ करती थी। मेरे यह काव्य संग्रह भी इसी सिम्त महज़ एक कदम है। ज़िन्दगी के सफ़र में मुहब्बत के कई रंग और मन्ज़र से मैं आशना और बावस्ता रहा। मसलन मिलन, तन्हाई, जुदाई, ख़ामोशी, इबादत, गिले-शिक़वे, बेरुख़ी, तौहीन, रन्जो-ग़म, बेचैनी, बेक़रारी, दीवानगी, बेख़याली, बेख़ुदी, इज़हार, इक़रार, सुकून, वफ़ा, ज़फ़ा, बेवफ़ाई, रुसवाई, मज़बूरी, हसरत, ऐतबार, इन्तज़ार, मायूसी, बदहाली, क़शिश, चाहत, अहसास, रूठना-मनाना और भी बहुत कुछ। मुहब्बत को जिस तरह से जिया उसे ही शायरी की शक़्ल में तहरीर करने की कोशिश की है याने मुहब्बत के ज़ज़्बात, मुहब्बत के लिये। मुहब्बत के गुलशन को आबाद होने के लिये इज़हार, इक़रार, गुफ़्तगू और मुलाक़ातें इतनी ज़रूरी नहीं है जितना मुहब्बत के अहसास का अपने दिलो-दिमाग़ और ख़्वाबो ख़यालों में हमेशा ज़िन्दा रहना ज़रूरी है।

मेरे यह काव्य संग्रह उस पाक़ और बेइन्तहा मुहब्बत जो राधा-कृष्ण, हीर-

राँझा, सोनी-महिवाल, लैला-मजनू, शीरी-फ़रहाद की मुहब्बत जैसी है जिसमें निर्मल व पवित्र, इन्सानियत व हमदर्दी की भावनायें हैं और जो अजर-अमर है को समर्पित है जो बेहद मज़बूर,लाचार और बेबस होने के बावजूद भी अपने महबूब से मिलने और एकसार होने के लिये इतनी बेचैन और बेक़रार है कि ख़ास अपनों से और सारे ज़माने से बग़ावत के लिये तैयार है। मगर ज़माने के रस्मो-रिवाज़ और हालात से बहुत बेबस है। मुहब्बत में इस कदर बेख़ुदी का आलम है कि हर वक़्त अपने महबूब का ख़याल ही हमेशा दिल और दिमाग़ में रहता है। सांसों की हर धड़कन में उसका अहसास इतना ज़रूरी है कि उसके बिना ज़िन्दा रहना मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है। मुहब्बत में इस कदर जोश व जुनून और दीवानगी है कि जान क़ुर्बान करने को भी तैयार है। वादे व इरादे और जज़्बात व ख़यालात इस कदर बेहद मज़बूत है कि तमाम उम्र के लिये हर हालात में शरीके हयात बनकर हमसफ़र रहने को तैयार है। विरह की व्याकुल वेदना में अपने तन-मन से भी बेसुध और सारी कायनात से भी बेख़बर है। ख़्वाबों और ख़यालों में सिर्फ़ और सिर्फ़ हर वक़्त अपने महबूब का अक़्स और फलसफ़ा रहता है। मालूम है कि आख़िर में क्या होगा मगर मुहब्बत में दिल और दिमाग़ इतना दीवाना होता है कि किसी की भी नहीं मानता। उसे तो अपना महबूब ही सब कुछ नज़र आता है। यहाँ तक कि ख़ुदा से कम नहीं लगता। मुहब्बत के अहसास, क़शिश और चाहत को मुक़म्मिल तौर पर सही तरह से तहरीर करना बेहद मुश्क़िल है। महबूब का आशियाना जन्नत और ख़ुदाई से बेहतर लगता है। तन्हाई में महबूब की यादों में रहना ज़ियारत से कम नहीं है। जुदाई का वक़्त काले पानी की सज़ा से भी ज़्यादा है। यह कहना बेहद मुनासिब होगा कि मेरी मुहब्बत का यह आख़िरी और मुक़म्मिल फलसफ़ा है कि मेरा प्यार मेरे तन-मन, मेरे दिल औ दिमाग़ यानी मेरी ज़िन्दगी की कायनात का सम्पूर्ण संसार है।

मुहब्बत का यह ख़ूबसूरत सफ़र उस मन्ज़िल पर है जहाँ पर एक-दूसरे को शरिके हयात का अहसास रहता है इसलिये मैंने शायरी में ऐसे शब्दों को काम में लिया है जैसे सुहाग का सिन्दूर, करवा चौथ का व्रत, वरमाला, सात फेरे, सात वचन, सुहाग की सेज, घर परिवार, रस्मो रिवाज़ के बन्धन जो कि एक शादीशुदा ज़िन्दगी में ही यह सब कुछ होता है। निर्मल और पवित्र प्यार अजर और अमर मुहब्बत का मक़सद ऐसा होना चाहिये जिसमें शरीके हयात के ऐतबार, अहसास, जज़्बात, ज़रूरतों,

परेशानियों, मज़बूरियों और बेबसी के मुक़म्मल तसव्वुर दिलो-दिमाग़ में रहे और मुहब्बत जन्मों-जन्मों के लिये सात फेरों के बन्धन में बन्धने को बेहद बेताबी और बेसब्री से बेहद बेचैन और बेक़रार रहे। ख़ुदा ख़ैर करे कि मुहब्बत का यह सफ़र ज़िन्दगी के इस मुकाम पर हर हालात में ज़रूर पहुँचे जहाँ पर दो बदन एक जान हो जाते हैं और दुनिया से बेख़बर हो जाते हैं।

वैसे रूमानियत शायरी करना मुश्क़िल है। महफ़िल में सुनाना और दीवान की शक़्ल देना तो और भी बेहद मुश्क़िल है। रूमानियत सुख़नवर को जिस नज़र से देखा जाता है वह शख़्सियत अच्छी नहीं मानी जाती है फिर भी मैं यह नादान ग़ुस्ताख़ी कर ख़तरा मोल ले रहा हूँ। उम्मीद है मेरी यह कोशिश आपको पसन्द आयेगी और आपके दिलो-दिमाग़ को सुक़ून मिलेगा। अपने दिली जज़्बातों से मुझे ख़बर करने की मेहरबानी ज़रूर करें। आपके जज़्बात, ख़यालात और सलाह मेरे लिये बहुत अहमियत रखती है। इन काव्य संग्रहों में कुछ ऐसा लिखने में आ गया हो और जिससे किसी के दिल और दिमाग़ को ठेस पहुँचती है तो मैं तहेदिल से माफी माँगता हूँ। यक़ीनन ऐसा मेरा कोई इरादा नहीं था।

किसी एक विषय पर इतनी सारी रचनायें लिखना यदपि नामुमक़िन तो नहीं है मगर बेहद मुश्क़िल ज़रूर होता है इसलिए रचनाओं में शब्दों व सोच का दोहराव आ गया हो फिर भी यथा सम्भव इस दोहराव से बचने की तमाम कोशिशें की गई है। अधिकतर रचनायें ग़ज़ल जैसी विधा में है। ग़ज़ल के तमाम शेर एक ही विषय पर हों यह ज़रूरी नहीं होता है। फिर भी एक ही विषय पर ग़ज़ल जैसी विधा में रचनायें लिखकर मैनें नई परम्परा आरम्भ की है जो कि रचना की विषय वस्तु से पूरी तरह से तालमेल रखती है। जब रचनायें एक ही विषय पर अधिक मात्रा में हो जाती हैं तो रचना संसार भी विस्तृत हो जाता हैं। तब फिर नई-नई उपमायें और प्रतीकों का सृजन होता है। मैंने बहुत सारे ऐसे शब्दों, उपमाओं और प्रतीकों का प्रयोग किया है जिनकी बानगी इन रचनाओं में देखी जा सकती है। ऐसा है मेरा प्यार, महबूब का इस्तक़बाल, चाहत का चिन्तन, चाहत और क़शिश मेरे लिये, मुहब्बत मेरे लिये, प्रकृति और प्यार, बेबस दिल की पुकार, विरह की वेदना, क्या यह मुमक़िन होगा, शजर का फलसफ़ा, महबूब का तसव्वुर और मुहब्बत के सुबूत। अमूमन रूमानियत शायरी में ऐसा होता

नहीं है। उम्मीद है कि इन रचनाओं में इन उपमाओं से कुछ नया ज़रूर लगेगा और आप अच्छा महसूस करेंगे। हो सकता है भविष्य में यह रचनायें रूमानियत शायरी के सन्दर्भ में आम आदमी के लिये चर्चा का विषय बन जाये।

मेरी यह ख़्वाहिश और तमन्ना नहीं है, मेरी यह आरजू और मन्नत भी नहीं है कि, मेरी शायरी इल्मी अदब की महफ़िलों में शायरों के लिए मयार (उच्चस्तर)की हो व बज़्म में पायेदार (सम्मान-जनक)भी हो। तमाम शायर मेरी शायरी पर तबादला-ए-ख़याल (विचार-विमर्श) कर अपना बेशक़ीमती वक़्त बर्बाद करें। मेरी तो सिर्फ़ इतनी सी इल्तजा (प्रार्थना)और ख़ुदा से ताहीर (निर्मल)और पाक़ दुआ है कि मेरी शायरी में मेरे महबूब के निर्मल व पवित्र अहसास, हसीन व ख़ूबसूरत जज़्बात, ख़्वाब व ख़याल, यादें व मुलाक़ातें, दिल का ऐतबार, क़रार व इन्तज़ार, पाक़ दुआयें, चैन व सुक़ून, दास्तान व अरमान, आराधना व साधना, दिल की पुकार, विरह की वेदना, मधुर-मिलन, शजर का चिन्तन, दीदार व मिलन, त्यौहार व परिवार, रोम-रोम का आभास, तन-मन का विश्वास यानि मेरे महबूब के तन-मन के सम्पूर्ण संसार के सिवाय कुछ नहीं हो।

विस्तृत अर्थों और सन्दर्भों में मुहब्बत महज़ एक ख़याल और तसव्वुर नहीं है। हज़ारों सालों का इतिहास ग़वाह है कि प्यार की वज़ह से वो भी मुमक़िन हो गया जो बेहद नामुमक़िन था। हक़ीक़त और यथार्थ में कोई पारिवारिक और सामाजिक बन्धन में बन्धकर नर्क से भी बदतर ज़िन्दगी को जी रहा है। यदि उसे महज़ तसव्वुर में अपने महबूब से हसीन मुहब्बत का ख़ूबसूरत अहसास हो जाता है और अपना नर्क से भी बदतर जीवन जन्नत से भी बेहतर लगता है और अपना तन-मन, रोम-रोम और दिलो दिमाग़ इतना ख़ुशगवार लगता है कि जैसे सावन और बसन्त के मधुमास में गुलशन हरियाली और ख़ुश्बुओं से महक कर आबाद रहता है। मैं तो इन ख़यालात को किसी भी प्रकार से ग़लत नहीं समझता हूँ और मुहब्बत को अक़ीदत (श्रद्धा) समझकर इबादत (पूजा) करता हूँ।

'क्या यह मुमक़िन होगा' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार की वज़ह से जो हालात तन-मन, दिल और दिमाग़, रोम-रोम और अपनी ज़िन्दगी पर जो बेहद गहरा असर होता है वह कैसे ख़त्म हो सकता है उनको बयान करने की कोशिश की है।

महबूब का इस्तक़बाल (स्वागत) शीर्षक से जो रचनायें है वह फ़िल्मी गीत 'बहारों फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है' से प्रेरित है जिसमें यह लिखने की कोशिश की है जब महबूब प्रथम मधुर मिलन के लिये आता है उसके स्वागत में लिखी गई रचनाएँ हैं जिसमें महबूब के स्वागत में अनेक तरह के दिली जज़्बात, अहसास, सारी की सारी कायनात से इसरार और निवेदन, अभिनन्दन और अभिवादन तहरीर किये गये हैं। 'ऐसा है मेरा प्यार' शीर्षक से जो रचनायें हैं उनमें प्यार को कई तरह से उन उपमाओं से परिभाषित किया गया है जो दैनिक जीवन में काम आती है। इन रचनाओं में आधुनिक परिवेश की परम्परागत परिवेश से तुलना कर प्यार के अहसास और जज़्बात को अनूठा और निराला बनाये रखने की दिली ख़्वाहिशें और तमन्नायें हैं। और भी बहुत सारी रचनायें है जो एक ही विषय वस्तु पर एक ही शीर्षक पर अलग-अलग तरह से बहुत बार लिखी गई है ताकि उस विषय वस्तु का सम्पूर्ण वर्णन किया जा सके। बेबस दिल की पुकार, मधुर मिलन, मन की मुरादें, महबूब का अक़्स, मुहब्ब्त का अहसास, मिलन की मन्नतें, महबूब का तसव्वुर, आदि तवील रचनायें है जिसमें मुहब्बत की दास्तान को मुक़म्मिल तौर पर तहरीर किया गया है। महबूब का तसव्वुर रचना में महबूब को माँ, पत्नी, बहन, दोस्त,औरत, बेटी और महबूब के तसव्वुर में ख़याल किया गया है।

काव्य संग्रहों के शिल्प में कई कमियाँ और गलतियाँ हो सकती हैं जानकार और समझदार इसे नज़र अन्दाज़ कर, एक आम आदमी बनकर अपने दिली जज़्बात और अहसास को अपने महबूब से गुफ़्तगू के रूप में देखेंगे तो आपको चैन और सुक़ून मिलेगा। दिल से किये गये काम में कुछ भी अच्छा बुरा नहीं होता सिर्फ़ और सिर्फ़ दिल की आवाज़ होती है जो अच्छी हो या न हो यक़ीनन बुरी तो नहीं होती। इन रचनाओं को इस सन्देश 'मेरा पैग़ाम अहले मुहब्बत है जहाँ तक पहुँचे बहुत पहुँचे' के रूप में देखा जाये।

इन काव्य संग्रहों के मुक़म्मिल होने में जो योगदान श्री भगवत सिंह जादौन 'मयंक' और श्री शम्भू दयाल विजयवर्गीय ने दिया है उसके लिये मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ। बेशक़ीमती अभिमत के लिये श्री विष्णु शर्मा 'विष्णु',श्री रामेश्वर शर्मा' रामू भैया', श्री अम्बिका दत्त चतुर्वेदी, श्री जितेन्द्र 'निर्मोही', जनाब शकूर

अनवर, श्री महेन्द्र 'नेह', श्री अरविन्द सोरल का तहेदिल से शुक्रिया अदा करना मैं अपना फ़र्ज़ समझता हूँ। शायरी को बेब साइट www.xyzsathi.com पर भी पढ़ा जा सकता है।

इस अश्आर के साथ अपनी गुफ़्तगू को ख़त्म करता हूँ।

मुझे दुनियादारी का सिर्फ़ इतना सा ही ज्ञान है
मुहब्बत ही ख़ुशहाल ज़िंदगी के लिये विज्ञान है।

तहेदिल से आपका अपना

'साथी' जहानवी
(अजय कुमार शर्मा)
आम आदमी की मुहब्बत का शायर

प्रथम मंजिल, दीपश्री भवन
मल्टीपरपज स्कूल के सामने, गुमानपुरा कोटा 324007
मो. : 9414227447, 9214427447

बेताब मुहब्बत

मुझसे जुदाई के पलों में वह इतना मचलता है
जैसे दूध पीता बच्चा अपनी माँ से बिछुड़ता है

वह कितना बदनसीब, बेबस और मज़बूर होगा
प्यासा साहिल पर दो बूँद पानी को तरसता है

बेक़रार होकर जब रोता है बेबस व बेचैन दिल
बेताब दिल में काली घटा का बादल गरजता है

दिल में चाहत व क़शिश की तूफानी लहरों से
दिल औ दिमाग़ में प्यार का सागर उफनता है

तन्हाई में जुदाई की बिजली गिरती है दिल में
डर कर मेरी बाँहों में समाने के लिए तड़पता है

विरह की वेदनाओं में अगन सा तपता है बदन
शीतल होने के लिए आँख से झरना बरसता है

वक़्ते मुलाक़ात अहसास व जज़्बात ऐसे हैं कि
रोम-रोम में समाने को ज़र्रा-ज़र्रा बिखरता है

उम्मीद औ ऐतबार का ऐसा दीनो-ईमान 'साथी'
क़यामत के वक़्त भी सोलह श्रृंगार से सँवरता।

प्यार में ऐसा भी

मुहब्बत का रिश्ता निभाने का ऐसा क़रार किया है
चाँद व सूरज रहने तक ख़ुद को बरक़रार किया है

मधुर मिलन के लिए इस तरह से बेक़रार किया है
सूरजमुखी के फूल के जैसे मन को तैयार किया है

अपने वादे व इरादों से इस तरह ख़बरदार किया है
सुहाग का सिंदूर भरकर प्यार को परिवार किया है

अमावस की रातों में भी मन से ऐसा प्यार किया है
चाँद को काली रात में नूर के लिए लाचार किया है

उम्मीद में सूरज ढला तो चाँद पर ऐतबार किया है
इस तरह दिन व रात महबूब का इन्तज़ार किया है

सोने ने तपकर ही कुन्दन जैसा वज़्नदार किया है
ऐसी चाहत व क़शिश से ही प्यार इज़हार किया है

पतझड़ में सावन और बसंत को सदाबहार किया है
सहरा[2] में महकते चमन का सतरंगी संसार किया है

'साथी' ने दिली इश्क़ को कुदरती असरदार किया है
ज़माने के रस्मो-रिवाज़ी बन्धन को शर्मसार किया है।

प्यार एक साधना

दिलो-दिमाग़ में मुहब्बत की ऐसी दास्तान है
पत्थर पे तहरीर किया हुआ गहरा निशान है

दिल और दिमाग़ में महबूब की ही जुबान है
मुहब्बत इस कदर दिल में दीन औ ईमान है

प्यार का अहसास दिल में गीता व कुरान है
इज़हारे इश्क़ तो अदालत में हल्फ़े बयान है

हर पल मेरे लबों पर बस एक यही अजान है
महबूब के दिल की पुकार ही मेरा दीवान है

नाक़ाबिले बर्दाश्त ख़ता के लिए भी यह दुआ
ख़ुदा माफ़ करना अभी वो इश्क़ में नादान है

नामुमक़िन हालात में भी मुहब्बत आबाद रही
बंजर ज़मीन चमन हो ऐसा मन में किसान है

महबूब के जज़्बात और ज़रूरतें मुक़म्मिल हो
मेरे मन के संसार में सिर्फ़ ऐसा ही मकान है

महबूब की ख़्वाहिशों और खुशियों के मुताबिक
मेरे ख़्वाबों औ ख़यालों में ऐसा हसीं जहान है

महबूब की यादों में लिखे हुये ख़त ही 'साथी'
बस यही मेरे पास इकलौता क़ीमती सामान है।

---

1. तहरीर=लिखा हुआ **2.** हल्फ़े बयान=शपथपूर्वक कहना
3. अजान=प्रार्थना के लिए पुकार **4.** मुक़म्मिल=पूर्ण।

मुहब्बत का मज़हब

इश्क़ में दीवानगी की जो भी दिली दास्तान है
चाहत और क़शिश में उस के लिए संविधान है

मुहब्बत का रिश्ता निभाने में कहाँ से बेईमान है
मुहब्बत में सब कुछ जायज़ यह उसका ईमान है

प्यार में अगर ज़ालिम ज़माना जंग का मैदान है
फिर उस के मज़बूर हाथों में तीर और कमान है

महबूब का आशियाना उसको मन्ज़िले-मक़सूद[1] है
फिर चाहे वहाँ पे ख़तरनाक खतरे का निशान है

अपने महबूब की जो भी ख़बर सुना दे उसको
फिर वो ही तो उसके लिए इकलौता भगवान है

मुहब्बत हमेशा के लिए घर औ परिवार हो जाये
ऐसे जोश औ जुनून से फिर क्या वह नादान है

रोम-रोम में हर पल उसकी मुहब्बत के अहसास
उसके दिल में दिन और रात ऐसा ही जहान है

मुहब्बत के लिए हर हाल में सलामत के जज़्बात
'साथी' के लिए तो उस की जान तक कुर्बान है।

1. आख़िरी पड़ाव

मासूम मुहब्बत

मुहब्बत के लिए मेरी ख़ुदकुशी मेरा अंज़ाम है
मेरी वफ़ा पर फिर भी बेवफ़ाई का इल्ज़ाम है

महबूब के ख़याल में तन व मन की लगाम है
मुहब्बत के लिए मन मन्दिर में ऐसा मुक़ाम है

रोशनी को जब चराग़ों पर ऐतबार ही नहीं हो
जल कर भी चराग़ की ज़िन्दगी फिर हराम है

मुहब्बत के लिए मेरी बेइंतहा वफ़ाओं के सुबूत
हर पल महबूब के अहसासों में मेरा कलाम है

दिल के समन्दर में जुदाई की उफनती लहरें
मधुर मुलाक़ात की क़श्ती विरह में बेलगाम है

मेरे रोम-रोम में उल्फ़त के लिए ऐसे अहसास
सारी कायनात में जिस की चर्चाएँ सरेआम है

चाहत और क़शिश में दीदार की ऐसी आरज़ू
अंगारे बरसाती धूप में नंगे पाँव से सरे-बाम[1] है

हैवान भी डर कर ख़ौफज़दा हो जायेगा 'साथी'
सुहाग के सिन्दूर को शैतान का भी सलाम है।

1. छत

मुहब्बत में ऐसा भी

मुहब्बत के लिए उसकी मासूम जान हथेली पर है
जो कुर्बान महबूब के एक पल की नाराज़गी पर है

मुहब्बत में चाहत और क़शिश ऐसी मज़बूरी पर है
एक दूसरे को देखे बिना चैनो-सुकून बेबसी पर है

मुहब्बत में मज़बूर है ज़माने के रस्मों व रिवाज़ों से
वरना समंदर में पानी की तरह से दीवानगी पर है

अहसास और जज़्बात में इस तरह से पागलपन है
मुहब्बत शमा और परवानों की तरह लाचारी पर है

महबूब के बिना तो अब ज़िन्दा रहना नामुमकिन है
ख़ुश्बू की ज़िन्दगानी तो फूलों की ज़िन्दगी पर है

महबूब के तसव्वुर[1] अब तो इस तरह से इबादत[2] पर
फ़क़ीरों की अक़ीदत[3] जैसे ख़ुदा की बन्दगी[4] पर है

दिल औ दिमाग़ में हर पल महबूब का ही ख़याल
तन-मन का चैनो-सुकून प्यार की सलामती पर है

तन-मन गिरफ़्तार है महबूब की हसीं मुलाक़ात में
मधुर मुलाक़ातों से ही अब जुदाई जमानती पर है

बेबस औ जुदाई की करवटें बदलती रातों में 'साथी'
शाम का ढलता हुआ आफ़ताब[5] भी बेख़याली पर है।

---

1. तसव्वुर=ख़याल **2.** इबादत=प्रार्थना **3.** अक़ीदत=श्रद्धा
4. बन्दगी=भक्ति **5.** आफ़ताब=सूरज

बेशुमार मुहब्बत

नामुमकिन को मुमकिन समझता है यह उसका ईमान है
आँसुओं से अपना बदन नहलाता है यह उसका स्नान है

मालूम है कि उसकी दुआयें हर हाल में क़ुबूल नहीं होगी
उस की उम्मीदों और ऐतबार से तो ख़ुदा भी परेशान है

माना कि मौत पे उसका कोई अख़्तियार[1] हो नहीं सकता
उसका तड़प-तड़प कर जीना भी तो मरने के समान है

माँग में सुहाग का सिन्दूर ही तो सब कुछ नहीं होता है
रोम-रोम में जो अहसास वह भी तो प्यार का निशान है

दिल औ दिमाग़ में ऐसा जोश औ जुनून मुहब्बत के लिए
सरहदों की हिफाज़त में जान कुर्बान करने को जवान है

मुहब्बत की नादानी में जुल्मो-सितम का ऐसा पागलपन
विरह की वेदना में तन-मन को ज़ख्मी करके शैतान है

क़ुबूल न कर सको तो सरे-आम बदनाम ही कर दो मुझे
रुसवाईयों[2] में भी तो मुहब्बत के अहसास की पहचान है

ज़र्रे-ज़र्रे[3] में भी तलाशा ख़ुदा को अपनी मन्नतों के लिए
'साथी' तलाश जारी है जहान में कहीं और भी भगवान है।

---

1. अख़्तियार=नियन्त्रण **2.** रूसवाई=बदनामी **3.** ज़र्रे-ज़र्रे=कण-कण।

ख़ुशनसीब मुहब्बत

मुहब्बत के अहसास को दिलो-दिमाग़ से ऐसा माना
मेरा शुक्रगुज़ार होना और उसका अहसानमन्द होना

प्यार की कपास को विश्वास की कसौटी पर धुनकर
तार-तार न होने वाली मुहब्बत का बुना ताना-बाना

बताकर उम्र-क़ैद की सजा क़ुबूल कर ली हमने
ऐसे जज़्बात से एक-दूजे को दिल में गिरफ़्तार माना

पानी हमेशा भाप बनकर फिर पानी बनकर बरसता है
जन्म-जन्म तक साथ निभाने का होगा हमारा याराना

नदी व सागर का पानी मिल कर हो गया पानी-पानी
एक-दूजे के रोम-रोम में हमारा ऐसा हो गया समाना

बेगुनाह होकर भी दिल से मज़बूर होकर गुनहगार बने
रिश्तों की हिफ़ाज़त में ऐसा निर्मल है हमारा दोस्ताना

जब मुहब्बत का आशियाना स्वर्ग से भी सुंदर हो गया
फिर क्यूँ ग़म कि क्या कुछ खोना और क्या कुछ पाना

मौत को भी आने से पहले यह भी सोचना होगा 'साथी'
क्योंकि अहसास में हमारे दो बदन का एक जान होना।

बेरहम इन्सानियत

बेगुनाही के सुबूत दिल में दफ़्न कर गुनहगार हूँ
बेगुनाह हो कर ज़माने की नज़रों में क़ुसूरवार हूँ

इन्सानियत में इतना बेबस, मज़बूर और लाचार हूँ
तौहीन व ज़लालत में ज़माने के लिए मज़ेदार हूँ

ख़ामोश निग़ाहों औ बेज़ुबान तसव्वुर से बेक़रार हूँ
आईने के सामने ख़ुद का बेबस व बेचैन दीदार हूँ

प्यार के समन्दर में वफ़ा की क़श्ती पर सवार हूँ
साहिल के लिए तूफ़ानी लहरों में बिना पतवार हूँ

ख़्वाहिशों में हर हाल में हर किसी का अधिकार हूँ
मनमर्ज़ी के मुताबिक़ उनकी ख़ुशियों का संसार हूँ

ज़रूरत के वक़्त तो मैं ही उनका ख़ास परिवार हूँ
बाद में मेरी पीठ पर ख़ंज़र औ हाथ में तलवार हूँ

उनके मक़सद और मतलब के ज़रिये का क़रार हूँ
उनकी सहूलियत में ख़ुदग़र्ज़ी से शैतानी रफ़्तार हूँ

समन्दर में बारिश औ सावन में पतझड़ की बहार हूँ
पूनम की चाँदनी रात में चाँद होकर भी अंधकार हूँ

तौहीन औ ज़लालत से ज़िन्दा रह कर ख़ुशगवार हूँ
शे'र औ सुख़न के लिए मुनासिब और मसालेदार हूँ।

---

1. तसव्वुर=विचार **2.** सुख़न=कविता।

उजाले अन्धेरे की ओर

जब आकाश में ही बेरहम हाथों से शिकार है
मुहब्बत का पंछी फिर क्यूँ उड़ने को तैयार है

मुझे पानी पिला दो यह समन्दर की पुकार है
सावन के मौसम में पतझड़ की ऐसी बहार है

उफनती दरिया में ग़ायब है लहरों की रवानी
दीवाने प्यार की क़श्ती में फिर कहाँ सवार है

मुहब्बत के समंदर में मिलन की तूफ़ानी लहरें
लहरें समन्दर में फिर से समाने को लाचार है

वक़्त–बेवक़्त हरे–भरे शजर[1] का बेरहम कटना
मुहब्बत जब घर व परिवार होने को बेक़रार है

एक पल की ख़ता और ता–उम्र के लिये सज़ा
प्यार में बेबस दिल से मजबूर होकर इज़हार[2] है

मुहब्ब्त से महकती है सारी की सारी कायनात[3]
और प्यार के लिये ज़माने के तीर व तलवार है

'साथी' चाँद और सूरज जब बेवफ़ा हो जाये तो
उजाले और अन्धेरे फिर किस लिये गुनहगार है।

---

1. शजर=पेड़ 2. इज़हार=कहना **3.** कायनात=संसार

दीवानगी में दीवाना

बेचैन पिया को मिलन के लिए तड़पाना
गुनाह काफ़ी है सज़ा–ए–मौत को पाना

ज़िन्दगी जन्नत, जब हो महबूब का आना
ज़िंदगी दोज़ख[1], जब हो महबूब का जाना

मुहब्बत का फलसफ़ा[2] इस तरह से है कि
महबूब ने इसलिए महबूब को ख़ुदा माना

किसी क़यामत[3] से भी कहाँ कम गुज़रता
बिना वज़ह नाराज़ पिया को जब मनाना

बेख़ुदी में जब दो तन एक जान हो जाये
मौत से फिर क्या और कैसे हमें घबराना

अश्क़ बदन पे इस तरह से झुलस रहे हैं
यह है विरह में तन और मन को जलाना

इन्तज़ार में भले ही मौत क्यों न आ जाये
आख़िरी ख़्वाहिश होगी महबूब से मिलाना

महफ़िल में शमा जब जल ही चुकी है तो
कैसे मुमक़िन होगा परवाने को भुला पाना

दरिया की लहरें उफनकर लाचार है 'साथी'
बेरहम समंदर का बेबस दरिया को सताना।

---

1. दोजख़=नर्क **2.** फलसफ़ा=चिन्तन **3.** क़यामत=आख़िरी रात

मुहब्बत का अफ़साना

चाँदनी रातों का तो सिर्फ़ इतना सा फसाना है
चाँद का चकोर से मुलाक़ात का एक बहाना है

कायनात में गर चैनो-सुकून का कोई तराना है
महबूब की याद में मन की वीणा को बजाना है

दिन को रात कह दे मुहब्बत का ऐसा याराना है
दिल की दास्तान तो सिर्फ़ उसी को सुनाना है

दिल जिस सूरत का बेख़ुद होकर के दीवाना है
मन के मन्दिर में तो सिर्फ़ उसको ही पुजाना है

मुमताज की रूह तड़पी कटे हाथों को देखकर
ताज की तामीर में शाहजहाँ का क्या इतराना है

ख़ुद को ख़त्म कर समन्दर के वजूद को बनाया
और सागर दरिया की अहमीयत से ही बेगाना है

आईना, आईना ही था झूठ कैसे, कब तक बोलता
फिर भी ख़ुद न समझना मन को ही समझाना है

कौन कैसे व क्यों किसका कुसूरवार होगा 'साथी'
शमा का जलना और परवाने का ख़ुद जलाना है।

---

1. चकोर=चाँद का महबूब **2.** तामीर=निर्माण।

लाचार मुहब्बत

चाँदनी को चाँद का बेबस इंतज़ार है
चाँदनी रातों में यह कैसा अन्धकार है

ज़मीन औ आसमाँ मिलने को तैयार है
चाहत और क़शिश का कैसा मयार[1] है

वादा-इरादा निभाने का ऐसा क़रार है
जहान का चाँद-सूरज पर अधिकार है

शमा बुझने को व पतंगा जलने को है
ज़िन्दगी मौत से मिलने को बेक़रार है

बेबस होकर आँसुओं से प्यास बुझाना
दरिया व समन्दर इस तरह लाचार है

वक़्ते मिलन विरह के बहते हुए अश्क़
फिर दीपक राग में भी राग मल्हार है

ख़्वाबो-ख़यालों में मधुर मिलन के पल
फिर पतझड़ में भी सावन की बहार है

हाथों में हाथ और 'साथी' का ऐतबार है
चाहे तूफ़ानों में क़श्ती बिना पतवार है।

---

1. मयार=स्तर

बेइन्तहा दीवानगी

विरह की वेदना में जो अश्क़ बहाना है
दरिया और समन्दर उसे क्या बताना है

पानी से आग को किस तरह बुझाना है
मुझको जब पानी में ही आग लगाना है

नामुमक़िन फूलों से ख़ुश्बू अलग करना
उसके बिना तो ज़िन्दगी को मिटाना है

रोम-रोम में अहसास रहता है उस का
फिर कौन से रिश्ते के सुबूत दिखाना है

हज़ारों मील से आमने-सामने की बातें
ख़त में फिर कौनसी तहरीर[1] लिखाना है

उसका तो पल-पल में आभास रहता है
मुलाक़ातों में क्या सुनना और सुनाना है

सारा तन-मन उसके नाम कर तो दिया
ज़िंदगी में फिर क्या कुछ मुझे बचाना है

ख़्वाबो-ख़यालों में उसका तसव्वुर[2] 'साथी'
दिल और दिमाग़ में फिर क्या समाना है।

---

1. तहरीर=लिखावट 2. तसव्वुर=विचार

ऐसा क्यों नहीं

रिश्ता है मगर मन से रिश्ते का अहसास नहीं
दिनकर[1] है मगर दिन में दिन का आभास नहीं

बिना सिन्दूर सुहाग की सेज पर सहवास नहीं
मन में मन से मधुर मुलाक़ात के मधुमास नहीं

बिना आग के कभी भी धुँआ नहीं उठा करता
दिल में मुहब्बत है तो क्या उस में साँस नहीं

हर वक़्त तन व मन में महबूब का ही तसव्वुर[2]
क्या दो बदन, एक जान होने का प्रयास नहीं

सोच समझकर तन औ मन से गले मिलता है
क्या शमा परवाने की सुकून का आवास नहीं

ज़हर तो ज़हर ही रहेगा चाहे मीठा ही क्यों न हो
ख़ुदग़र्ज़ी की मधुर मुलाक़ात में भी मिठास नहीं

सावन औ बसन्त में पतझड़ के जैसा मौसम है
जगमग दीपावली की रातों में भी उजास नहीं

बिना हवा और पानी के तो इन्सान मर जायेंगे
मेरी वफ़ाओं का इस हद तक भी विश्वास नहीं

अब तो समझदार भी दिमाग़ से समझने लगे हैं
सिरफिरे 'साथी' की शायरी अब तो बक़वास नहीं।

---

1. दिनकर=सूरज **2.** तसव्वुर=विचार

मुहब्बत ही सब कुछ

मुहब्बत के लिए अपनी जान तक कुर्बान है
चाहत और क़शिश में ख़तरे का निशान है

अपने तन-मन के अहसास मेरे नाम करके
उसकी ज़िन्दगी का मेरे नाम पर बेचान है

बेख़बर हो कर सारी की सारी कायनात[1] से
मेरे रोम-रोम में समाने के उसके अरमान है

लुटाकर अपनी तमाम उम्र का जमा सरमाया[2]
मेरा ऐतबार उसके लिए ईश्वर का वरदान है

बेक़रार और बेचैन होकर उसका गले मिलना
जैसे दरिया का समंदर में समाकर मिलान है

उस के लिए मेरे एक पल की भी नाराजगी
ख़ुशहाल महकता आशियाना भी शमशान है

सब कुछ बेमानी है अब तो उसके लिए 'साथी'
मेरे दिल के जज़्बात ही अब उसका ईमान है।

---

1. कायनात=संसार **2.** सरमाया=सब कुछ।

साथी का साथ

सारी दुनिया को अपने लिये बेकार करता है
विरह से वेदना में ख़ुद को बेक़रार करता है

ज़िन्दगी औ मौत को भी दरकिनार करता है
वह इस तरह से मुझसे इतना प्यार करता है

अपना सब कुछ मेरे अहसास के नाम कर के
अपने तन-मन का मुझको ज़मींदार करता है

मेरी मधुर यादों से अपना आँगन महका कर
अपने रोम-रोम में ख़ुशी की बहार करता है

सुहाग के रस्मो-रिवाज़ों के बंधन में बन्धकर
मेरे अहसास के साथ सारे त्यौहार करता है

ख़ुदा की ख़्वाहिश और रज़ामन्दी समझ कर
हसीन मुहब्बत को दिल में यादगार करता है

हज़ारों मील की दूरी भी बेमानी होती है उसे
मेरे पल-पल से अपने को ख़बरदार करता है

नामुमक़िन हालातों को भी मुमक़िन समझ कर
'साथी' ख़ुदा से इबादत में ये पुकार करता है।

---

1. दरकिनार=एक तरफ **2.** इबादत=प्रार्थना।

हालाते-इश्क़

मुहब्बत में दिल से दीवाना हो गया
फिर उसका दुश्मन ज़माना हो गया

कोई भी इल्म और तालीम[1] नहीं मुझे
महबूब से गुफ़्तगू[2] ही तराना हो गया

मिलन में दो बदन एक जान हो गये
दरिया का समंदर में समाना हो गया

इस जीवन में न सही अगले में सही
बेबसी में दिल को समझाना हो गया

जब सवालों के कोई भी जवाब न हो
मज़बूरी में वफ़ा को मिटाना हो गया

इक़रार है मगर इज़हार नहीं है 'साथी'
बेक़रारी में दिलों को सताना हो गया।

---

1. इल्म और तालीम=ज्ञान और शिक्षा
2. गुफ़्तगू=बातचीत **3.** तराना=गीत।

वैसे ही बनते जायेंगे

आपके तसव्वुर[1] सुनते जायेंगे
हम वैसे-वैसे ही बनते जायेंगे

हम से परेशानी महसूस हो तो
जज़्बात को दफ़्न करते जायेंगे

आपके हमदर्द है दुश्मन नहीं
बेफ़िक्र आपसे मिलते जायेंगे

जैसे हालात बताना चाहते हो
दिली जुबान से सुनते जायेंगे

बिना हवा-पानी जीना मुश्क़िल
धड़कन औ प्यास बनते जायेंगे

पक्का वादा है कि हद में रहेंगे
आहिस्ता दिल में बसते जायेंगे

दिल सब कुछ बयान कर देगा
पत्थर दिल भी पिघलते जायेंगे

कुछ आपके पास कुछ मेरे पास
एक-दूजे को पूरा करते जायेंगे

कितना जुनून है मरने का 'साथी'
आपके प्रेम की क़द्र करते जायेंगे।

---

1. तसव्वुर=ख़याल

अगर ऐसा हो तो

जब भी महबूब से जुदा हो कर जाना
फिर तो जन्नत से दोजख़ चले आना

महबूब ने बेगुनाह को गुनाहगार माना
गुनाह काफी, सज़ा-ए-मौत को पाना

बिना महबूब के जब ज़िंदगी को जीना
ज़िन्दा रहने के लिये क्या पीना-खाना

जब भी महबूब बेवफ़ा हो जाये फिर तो
ज़िन्दा लाश को बेज़ान कन्धों पर ढोना

ख़ुदकुशी कर ही लेगा महबूब फिर तो
बिना वज़ह जब भी महबूब को सताना

कौन गवाही देगा ऐसे बेदाग प्यार की
जब महबूब का जुर्म हो सुबूत मिटाना

मुहब्बत में ऐतबार ऐसे होने चाहिये कि
महबूब की हर बात में, हाँ में हाँ मिलाना

'साथी' जीवन साथी का अहसास हो तो
निर्मल हो कर तन और मन को लुटाना।

दोस्त और दुश्मन

मुहब्बत में जब-जब भी क़तरा समंदर हो जाता है
प्यार फिर दरिया के वजूद से बेख़बर हो जाता है

बेचैन महबूब के लिये ज़हर औ ख़ंज़र हो जाता है
जो अपने सच्चे प्यार के लिये अफ़सर हो जाता है

पिघल कर मोम की तरह से, सितमग़र हो जाता है
प्यार और मुहब्बत में ऐसा जादू मन्तर हो जाता है

जो ख़ुद की नज़रों में प्यार से बेहतर हो जाता है
महबूब के दिल और दिमाग़ में क़मतर हो जाता है

प्यार से कुछ भी नहीं ले कर बहुत कुछ देने वाला
मुहब्बत के लिये वो महबूब फिर शजर हो जाता है

ग़रीब और बदसूरत महबूब को कमजोर मत समझो
वक़्त पे प्यासे को पानी अमृत सा नीर हो जाता है

माथे पर हल्दी, रोली व चन्दन के तिलक से 'साथी'
बेवफ़ा महबूब का फिर दिल पर असर हो जाता है।

---

1. क़तरा=बूँद **2.** दरिया=नदी **3.** क़मतर=कमजोर **4.** शजर=पेड़।

अफ़सोस है कि

जो जगजाहिर है उससे भी वो ख़बरदार नहीं है
मेरी मौत की ख़बर उसके लिए समाचार नहीं है

मुझको जीने का अब कोई भी अधिकार नहीं है
मेरे महबूब को अब मुझ पर कोई ऐतबार नहीं है

बदहाल है मेरा तन औ मन और दिल औ दिमाग़
और वो कहता है कि मुझको उससे प्यार नहीं है

मेरी ज़िन्दगी अब तो उसके प्यार की अमानत है
ये ज़मानत उसके लिए कुछ भी वज़्नदार नहीं है

मेरी बेचैन और बेक़रार रूह तड़पती है इस क़दर
दफ़्न होने को अब दुनिया में कोई मज़ार नहीं है

पल-पल और रोम-रोम में जिया उसका अहसास
क्या वो मेरे तन व मन का सम्पूर्ण संसार नहीं है

सिर्फ़ व सिर्फ़ राई के बराबर नहीं है उसका हक़
मुझसे इतना लेकर वह नादान ख़ुशग़वार नहीं है

जवाहरात की परख तो जौहरी ही करेगा 'साथी'
मलाल तो यह है कि जौहरी ही समझदार नहीं है।

बेपनाह इश्क़

ग़लत होकर भी सही होने का उसे इत्मीनान[1] है
तन-मन से प्यार में इस क़दर इतना नादान है

जिस भी शायर के दिल में इश्क़ एक ईमान है
दीवानों की नज़र में बस वो ही पाक़ दीवान[2] है

उसके सिवा उसे कोई और भी तो मन्ज़ूर नहीं
इश्क़ की दीवानगी में ऐसे नाजायज़ अरमान हैं

सच को कैसे सच लिखूँ कि उसे सच ही लगे
उस के दिल में मेरी शायरी झूठ का निशान है

ख़ुदा के रहम औ करम का इतना सा फलसफ़ा[3]
सच्ची मुहब्बत की पुकार ही तो दिली अज़ान[4] है

मुहब्बत में दिल के रिश्ते कभी ख़त्म नहीं होंगे
दुआओं में महफ़ूज़ औ हथेलियों के दरम्यान[5] है

जीने के बज़ाय तो मरना ही बेहतर होगा 'साथी'
रिश्तों में गिले शिक़वे जबसे तीर और कमान है।

---

1. इत्मीनान=विश्वास **2.** दीवान=काव्य संग्रह **3.** फलसफ़ा=चिन्तन
4. अज़ान=प्रार्थना के लिये पुकार **5.** दरम्यान=बीच में।

तेरे नाम कर जायेंगे

बिना शिक़वे बिना गिला के ही मर जायेंगे
अगर मरते वक़्त तेरी तबस्सुम[1] देख जायेंगे

बना दे ज़िन्दगानी को ज़िन्दगी-ए-क़यामत
फिर भी हम तुझे रुसवा नहीं करके जायेंगे

तुमको लगूँ ज़रूरतमंद फिर याद कर लेना
तुम्हारी ख़ुशी के लिये ज़हर भी पी जायेंगे

इससे ज़्यादा और क्या इम्तिहान लेगा मेरा
तुझको भूलने के लिए ख़ुद को भूल जायेंगे

तेरे बिना इस 'साथी' को मिलेगी जन्नत भी
तो ज़िन्दगी-ए-जन्नत[6] को भी ठुकरा जायेंगे।

---

1. तबस्सुम=मुस्कराहट **2.** शिक़वा=शिक़ायत **3.** गिला=ग़म
4. ज़िन्दगी-ए-क़यामत = मुसीबत की ज़िन्दगी
5. रुसवा=बदनाम **6.** ज़िन्दगी-ए- जन्नत=स्वर्ग की ज़िन्दगी।

सब कुछ मुमक़िन

बेवफ़ा और बेशर्म होकर जब सहारा भी बदल जायेगा
फिर सीने पे पत्थर रखकर बेसहारा भी बदल जायेगा

क़िस्मत लिखने वाले को ग़लती का अहसास हो जाये
फिर क़िस्मत का लिखा हुआ दुबारा भी बदल जायेगा

दरिया[1] के दो साहिलों[2] का मिलन तो मुमक़िन न होगा
क़श्तियों से मिलन के लिये किनारा भी बदल जायेगा

अगर इंसानियत और हमदर्दी का साथ हो महबूब का
फिर तो बेहाल क़िस्मत का सितारा भी बदल जायेगा

अब मान भी जाओ हद से गुज़रना हर हाल में बुरा है
एक न एक दिन दिले-नादान हमारा भी बदल जायेगा

दिल में कुछ करने की ख़्वाहिशों, जोश और जुनून से
कभी न कभी तो फिर सबसे हारा भी बदल जायेगा

यह दिल और दिमाग़ कब किसके काबू में रहा 'साथी'
एक न एक दिन तो मेरा व तुम्हारा भी बदल जायेगा।

---

1. दरिया=नदी **2.** साहिल=किनारा।

ज़िन्दगी का फलसफ़ा

किस-किस को बेगाना[1] कहूँ किस-किस को अपना
कमबख़्त दिल ही न हुआ जब शरिके-हयात[2] अपना

फ़क्र[3] करते थे जिनके ऊपर, हम अपने दोस्ताने का
मकां मिला उनकी हयात में वर्क़[4] पे हाशिये जितना

औरो की ख़्वाहिशों में सदा-ए-दिल[5] दफ़्न कर दी
हासिल हुआ मगर वफ़ा के बदले ज़फ़ा का ख़जाना

वक़्त की नज़ाकतों के मुताबिक़ बदलना भी चाहूँ मैं
अभी बाक़ी है मगर ख़ुदा के यहाँ का फ़ैसला सुनना

ख़्वाहिशे-इश्क़ में मौत से बढ़कर क्या सिला मिलेगा
फिर भी बदल सकेगा न कोई 'साथी' की यह तमन्ना।

---

1. बेगाना=पराया **2.** शरिके-हयात=ज़िन्दगी का भागीदार
3. फ़क्र=गर्व **4.** वर्क़=पृष्ठ **5.** सदा-ए-दिल=दिल की आवाज़।

अमर प्रेम

मुहब्बत नहीं तो मुहब्बत की निशानी ही सही
हकीक़त मुमक़िन नहीं हो तो कहानी ही सही

प्यार में सुबूत, गवाह औ तहरीर[1] किस काम के
मन में ऐतबार हो तो इक़रार जुबानी ही सही

डोली नहीं आये अर्थी तो उसके घर से निकले
आख़री दिली ख़्वाहिश इतनी दीवानी ही सही

ज़िन्दगानी जब नर्क से भी बदतर हो जाये तो
भरी माँग दुबारा से भरने की नादानी ही सही

विरह की वेदना में विचलित हो तन और मन
सहरा[2] में पानी की चन्द बून्दें सुहानी ही सही

पतझड़ के मौसम में सावन के जज़्बात हो तो
विधवा की ज़िन्दगी फिर तो मस्तानी ही सही

प्यार अमीरी व गरीबी का मोहताज नहीं 'साथी'
जिस पे दिल आया वो दिल की रानी ही सही।

---

1. तहरीर=लिखावट **2.** सहरा=रेगिस्तान

मुहब्बत का फलसफ़ा

मेरे लिए मुहब्बत की इतनी अहमीयत है
हवा व पानी जैसे इन्सान की ज़रूरत है

मेरे दिल औ दिमाग़ की ऐसी क़ुदरत है
मुहब्बत मेरे लिए ज़रूरत औ फ़ितरत है

चाहत और क़शिश की इतनी हसरत है
तन मन में मासूम बचपन की शरारत है

मेरे ख़्वाबों व ख़यालों में ऐसी मुहब्बत है
शजर की ज़िंदगानी जैसी मेरी नीयत है

मुहब्बत दरिया व समंदर की नसीहत है
तन-मन में मुहब्बत की ऐसी तबीयत है

चाँद औ सूरज कायनात की हकीक़त है
रोम-रोम में मुहब्ब्त की ऐसी कैफ़ियत है

चाँद और सूरज की एक सी ही रंगत है
मुलाक़ात में फिर तो फुर्सत ही फुर्सत है

ज़हर की तासीर में 'साथी' जबसे अमृत है
बेपनाह नफ़रत से फिर दिली मुहब्बत है।

ख़यालों का अहसास

नज़र को बदलो नज़ारा भी बदल जायेगा
प्यार से देखें तो इशारा भी बदल जायेगा

वक़्त पर परखो जब अपने दिले-प्यार को
वक़्त पर दिल से प्यारा भी बदल जायेगा

रोज-रोज की ज़लालत व तौहीने-दिल से
मुहब्बत में बेचैन नकारा[1] भी बदल जायेगा

दिल के सहन करने की एक हद होती है
बेबस औ बेक़रार बेचारा भी बदल जायेगा

मन की वीणा के सुर से ताल न मिले तो
गीत गाता हुआ बन्जारा भी बदल जायेगा

मन मंदिर में जब कोई मूरत बस जाये तो
हैवान, शैतान औ आवारा भी बदल जायेगा

'साथी' घर परिवार के गिले औ शिक़वों से
बेइन्तहा[2] प्यार में कुँआरा भी बदल जायेगा।

---

1. नकारा=नालायक **2.** बेइन्तहा=बहुत अधिक।

मुहब्बत के अहसास : एक

इस तरह से वह चाहत व क़शिश के अहसास में रहता है
वह बेपनाह बदहाली में भी मुहब्बत के विश्वास में रहता है

उसके अंग-अंग और रोम-रोम में मुहब्बत ऐसे रहती है कि
उसका तन मन सावन और बसन्त के मधुमास में रहता है

हमेशा पहनकर रहता है तन-मन पर प्रेम की सतरंगी चूनर
उसका निर्मल-पवित्र, तन-मन हमेशा शुद्ध कपास में रहता है

उसके दिल में हसीन और ख़ूबसूरत मुलाक़ातों के ही नज़ारे
बेशुमार यादों के झिलमिलाते सितारों के उजास में रहता है

प्यार उसके लिये ऐसी आराधना, साधना व उपासना है कि
करवाचौथ के पावन त्यौहार के व्रत औ उपवास में रहता है

माथे पे बिन्दिया, हाथों में मेहन्दी व माँग में सुहाग का सिंदूर
सुहानी चाँदनी रातों में पिया से मिलन की आस में रहता है

बेचैन और बेक़रार होकर सारी की सारी कायनात से बेख़बर
उसका दिल और दिमाग़ मेरे ख़यालों के आभास में रहता है

घर और परिवार की ज़रूरत और दिल के ख़यालात बन कर
'साथी' का जीवन साथी बनकर तन-मन के आवास में रहता है।

मुहब्बत के अहसास : दो

तन और मन में इस तरह से आराम हो जाये
मुहब्बत में चैन औ सुकून का मुक़ाम हो जाये

नामुमक़िन भी प्यार से मुमक़िन काम हो जाये
नीम का शजर भी तो शजर-ए-आम हो जाये

प्यार में रन्जिशें व नफ़रतें भी नाक़ाम हो जाये
बबूल के काँटों में गुलशन का सलाम हो जाये

डूबते हुये को एक तिनके का सहारा काफ़ी है
प्यार के दो बोल भी राधा और श्याम हो जाये

मज़बूरियाँ कितनी भी ज़ालिम ही क्यों न सही
अहसास व जज़्बात से सीता औ राम हो जाये

ज़िन्दगी और मौत के ज़िन्दा सवालात हो कर
प्यार की ज़रूरत होकर प्यार के नाम हो जाये

मुहब्बत दिल की धड़कन औ अहसास बन कर
गुमनाम होकर फिर सरे-आम बदनाम हो जाये

मुहब्बत में ज़हर भी तो अमृत हो जायेगा 'साथी'
रिश्तों में दीवानी मीरा का जब पैग़ाम हो जाये।

मुहब्बत के अहसास : तीन

प्रेम परिवार हो गया है अब उसे बेपर्दा कर दो
बेरहम ज़ालिम ज़माने को अब तो मुर्दा कर दो

मैं ज़िन्दा हो कर भी तो एक मुर्दे के समान हूँ
अपने नाम के साथ दफ़्न करके ज़िंदा कर दो

मन के मंदिर में आपकी ही मूरत बसा रखी है
अब तो प्यार को ख़ुदा मान कर ख़ुदा कर दो

माना कि रस्मों औ रिवाज़ों से बेहद मज़बूर हो
पर्दे में ही सही प्रेम को मन से सज़दा[1] कर दो

सुहागन बन कर डोली न आ पाई तो ग़म नहीं
अपने आशियाने से मेरी अर्थी ही विदा कर दो

मज़बूर होकर अब तो माँग में सिन्दूर भर दिया
'साथी' अब तो साथी होने के हक़ अदा कर दो।

---

1. सज़दा=प्रणाम

मुहब्बत के अहसास : चार

यह बेमानी होता है कि कोई क्यों और कैसे ज़िन्दा है
ख़ास बात यह है कि वह किस के अहसास में मरा है

झूठे वादे व क़स्में यक़ीनन नाक़ाबिले-बर्दाश्त गुनाह है
मगर उसने ये गुनाह मुहब्बत में मज़बूर होकर करा है

क्या कोई इतना भी बदनसीब व बदहाल हो सकता है
जो रोज इंसानियत में ज़लील होकर प्यार में जिया है

उसे मालूम है औरत की ज़िन्दगी में सिन्दूर की क़ीमत
फिर भी नाक़ाबिल हो कर ख़ुशियों से माँग को भरा है

जो चराग़ जलाये थे मुहब्बत को रोशन करने के लिये
उसकी अगन में ही परवाना दीवाना बनकर के जला है

कोई इंसान इतना हैवान औ शैतान कैसे हो सकता है
जिसके दिल में प्यार के बदले में नफ़रत और ज़फ़ा है

सब को अपने अपने कर्मों का ख़ुदा को हिसाब देना है
फिर क्यों इन्साँ को एक-दूजे की ज़फ़ाओं का गिला है

बेगुनाह तो बेक़ुसूर बनकर भी सज़ा को तैयार है 'साथी'
वह तो किसी के दिल में सपनों का राज कुमार बना है।

त्यौहार के जज़्बात

भूख व प्यास नहीं करवा चौथ ऐतबार है
पति-पत्नी के पवित्र रिश्ते का त्यौहार है

आँखों से तो सिर्फ़ चाँद का ही दीदार है
दिल के मधुर मिलन में तो विसालेयार है

आराधना और उपासना में ऐसा संसार है
स्वस्थ और निरोगी जीवन का उपहार है

विश्वास व आशाओं का दर औ दीवार है
महफ़ूज़ सारा का सारा घर व परिवार है

चैन औ सुक़ून के लिये दिल में क़रार है
घर की सारी मुसीबतों के लिये तैयार है

निर्मल-पवित्र दुआओं में ऐसे चमत्कार हैं
बुरे वक़्त के हालात में ख़ुदा मददगार है

'साथी' भूख और प्यास से नहीं बेज़ार है
रिश्तों के अहसास से प्राणों का संचार है।

नाइन्साफ़ी : एक

मज़बूर हो कर मुहब्बत से वफ़ा हो जाना
ज़िन्दगी का ज़िन्दगी से बेवफ़ा हो जाना

पूनम की रात में चाँद की ज़लालत होना
चाँद के कुदरती फ़र्ज़ का सज़ा हो जाना

डूबते हुये को तिनके का सहारा काफ़ी है
मगर लहरों का क़श्ती से ज़फ़ा हो जाना

हर हाल में मुमक़िन नामुमक़िन कर दिया
अपने आपका ख़ुद से ही दगा हो जाना

प्यार को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् होना था
मगर ज़िन्दगी का इन से ख़फ़ा हो जाना

चाँद और सूरज की दहशत की ज़िन्दगी
तारों की रहमो-करम का क़ज़ा[1] हो जाना

ज़हरीली जुबान के ख़न्ज़र से ऐसे जख़्म
सख़्त पत्थरों का टूट कर जुदा हो जाना

प्यार के चन्द लफ़्ज़ों में अमृत की तासीर
'साथी' तौहीन के ज़हर से मुर्दा हो जाना।

1. कज़ा=अभिशाप

नाइन्साफ़ी : दो

समन्दर जब दो बून्द पानी के लिये प्यासा है
कायनात में क्या कोई इंसानियत का ख़ुदा है

बेगुनाह ने सोच समझकर जुर्म क़ुबूल करा है
क्या मासूम का जुर्म क़ुबूल करना ही सज़ा है

एक की ख़ुदकुशी और दूसरा जीने को बेबस
दोनों में से किसके दिल में मुहब्बत ज़्यादा है

किसे अपनी दिली ख़्वाहिशें अज़ीज़ नहीं होती
बेबसी औ लाचारी ही क्या ज़माने में बेवफ़ा है

एक बर्फ़ जैसा और एक मोम जैसा पिघल रहा
उल्फ़त के लिये वादे निभाने का कैसा वादा है

मुहब्बत है तो क्या उस का यही अंज़ाम होगा
जैसे दरिया के दो किनारे एक होकर जुदा हैं

शमा औ परवाने को जलकर ही ख़ाक होना है
प्यार की चाहत औ क़शिश में क्या करिश्मा है

रूह बन कर दो बदन एक जान हो गये 'साथी'
रोम-रोम में बस जाना ही तो दिल से वफ़ा है।

प्यार ही सब कुछ

मेरी ख़ुशी ही उस के लिये जान की अमान है
मेरी नाराज़गी उसकी ख़ुदकुशी का फरमान है

कोई भी रिश्ते नहीं है उसके इस कायनात में
मेरा साया ही तो उस का मुक़म्मिल जहान है

नामुमक़िन को भी हर हाल में मुमक़िन समझना
मुहब्बत की दीवानगी में इस तरह से नादान है

उसको ख़ुदा की तौहीन भी मंजूर है मेरे लिये
अपने मन मंदिर में मेरा तसव्वुर ही भगवान है

ज़माने के रस्मों औ रिवाज़ों से क्या लेना-देना
उसके लिये तो मुहब्बत ही दीन और ईमान है

हीरे व जवाहरात भी उसके लिये तो बेमानी है
मुहब्बत की मुलाक़ातें ही तो क़ीमती सामान है

अब कोई भी ख़्वाहिशें औ तमन्नायें नहीं उसकी
सिर्फ 'साथी' का हमसफर होने का ही अरमान है।

मुहब्बत के अहसास का असर

प्यार में ज़िन्दगी का मौत से ऐसा क़रार कर नहीं सकता
इंसान तो चाहत व क़शिश में ऐसा प्यार कर नहीं सकता

ज़मीन औ आसमान के मिलकर एक हो जाने की उम्मीद
नासमझ भी तो इस तरह इतना इंतज़ार कर नहीं सकता

दरिया के दो किनारों का हर हाल में मिलना मुमक़िन नहीं
मुलाक़ातों के लिए ख़ुद को ऐसा बेक़रार कर नहीं सकता

अमावस की अन्धेरी रातों में चाँद का बेबस-बेचैन इंतज़ार
करवा चौथ को भी फिर कोई ऐसा विचार कर नहीं सकता

पल-पल जलील होकर भी अपने प्यार को महफ़ूज़ रखना
कोई ख़ुद को ऐसा बेबस, बेचैन व लाचार कर नहीं सकता

हर पल रोम-रोम और दिलो-दिमाग़ में अहसास का रहना
दो बदन एक जाँ हुये बिना ऐसा साकार कर नहीं सकता

प्रेम के अहसास को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् जैसे माने बिना
प्यार के अहसास को सावन का सोमवार कर नहीं सकता

एक दूसरे को जन्मों-जन्मों तक के लिए अपना माने बिना
माँग में सुहाग का सिन्दूर भरकर इज़हार कर नहीं सकता

हर वक़्त 'साथी' की आँखों में हकीक़त के अक़्स का अहसास
हर पल ख़यालों में रहे बिना ऐसा दीदार कर नहीं सकता।

मुहब्बत की अहमीयत

प्यार के लिये उस का ऐसा ही पैग़ाम है
हवा औ पानी का ज़िंदगी में जो काम है

जितना कायनात में सच राम का नाम है
वैसे हर वक़्त लबों पर महबूब ही राम है

अक़ीदत और इबादत का ऐसा मुक़ाम है
ईश्वर को तो नहीं मुहब्बत को सलाम है

जीवन में इतना सा सरमाया व इनाम है
फ़क़त प्यार की दरगाह का ही इमाम है

मेरे दिल-दिमाग़ और साँसों में समाकर
रूह बन कर ज़िन्दा है मगर गुमनाम है

बिना दरिया समन्दर की अहमीयत नहीं
मुहब्बत का दरिया बन कर के बेनाम है

हवा व पानी ज़रूरी है गुलशन के लिये
प्रेम की महकती ख़ुश्बू होकर बदनाम है

मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा 'साथी'
उसकी ज़िन्दगी का इतना सा कलाम है

मुहब्बत का अहसास

तन-मन पर प्यार की सतरंगी गुलाल हो जाना
एक-दूजे को देखकर चेहरे का गुलाब हो जाना

दरिया बेबस हो कर प्यासे के पास आ जाये तो
ज़रूरत के जज़्बात होकर प्यार सवाब हो जाना

हरे-भरे दरख़्त का बेरहमी से बेवक़्त कट जाना
चाहत के बेबस व बेचैन होकर मलाल हो जाना

मुहब्ब्त जब ज़िन्दगी औ मौत का सवाल हो जाये
हवा और पानी का सौदा कर के दलाल हो जाना

जन्मों-जन्मों तक के लिये मुहब्बत जवाब हो कर
बेक़रार दिल व दिमाग़ के लिये सवाल हो जाना

जुदाई औ तन्हाईयों में आँखों से बहते हुये अश्क़
तन-मन पर पानी को आग का ख़याल हो जाना

पतझड़ में सावन और सहरा में गुलशन के हालात
प्यार को हसीं सफ़र का ख़ूबसूरत ख़्वाब हो जाना

बेचैन मुहब्बत तड़प-तड़प कर जब दम तोड़ दे तो
'साथी' को मुहब्बत का ज़ालिम जल्लाद हो जाना।

---

1. सवाब=पुण्य **2.** दरख़्त=पेड़ **3.** सहरा=रेगिस्तान।

मुहब्बत का मज़हब

उसकी जान मुझमें व मेरी उसमें जान है
मुहब्बत का सिर्फ़ इतना सा ही जहान है

नाम नहीं मगर अहसास नाम से बढ़ कर
बेनाम रिश्तों की दिल में ऐसी पहचान है

दिल में ख़याल जुदा-जुदा रहते है मगर
मुहब्बत में हम दोनों का एक ही ईमान है

लड़ते हैं झगड़ते हैं दोनों एक हो जाते है
क्योंकि प्यार में हमारा एक ही मतदान है

काले-गोरे, अमीर-गरीब में कोई भेद नहीं
मुहब्बत के अहसास में सब एक समान है

सात फेरों व वचनों के बंधन टूट जाते है
मुहब्बत में दिल से ऐतबार ही संविधान है

ज़माना जिसे अश्क़ बहाकर सुनेगा 'साथी'
ऐसी मुहब्बत का अफसाना ही दास्तान है।

मुहब्बत दरिया की रवानी

सागर सूख जाये मगर दरिया के पानी में रवानी है
शर्म से पानी-पानी होकर दरिया का निर्मल पानी है

प्यासा आँसुओं से प्यास बुझा-बुझा कर दम तोड़ दे
ऐसी हकीक़त व शर्मनाक बेवफ़ा पानी की कहानी है

ख़ुशहाल और आबाद बस्तियाँ दरिया के किनारों पे
दरिया अपना रस्ता बदल दे यह उसकी बेईमानी है

हर हालात में क़श्तियाँ आती-जाती रहे साहिल पर
दरिया की ऐसी रवानी है तो वो दिल से इन्सानी है

दरिया में रवानी न सही उसका नामो-निशान तो है
दीवाने मज़ार में दफ़्न है मगर ज़माने की जुबानी है

दरिया तूफ़ान बनकर आबाद बस्तियों को उजाड़ दे
चाहत क़शिश में इतनी दीवानगी फिर तो बेमानी है

'साथी' दरिया में रवानी रहे और समंदर में पानी रहे
पानी बादल बनकर जहाँ की ख़ुशहाल ज़िंदगानी है।

तक़रार में प्यार : एक

तक़रार में भी तो इस तरह का प्यार है
नीम के शजर से आम का इज़हार है

तक़रार में भी चाहत ऐसी बरक़रार है
एक दूजे को देखे बिना तो बेक़रार है

तक़रार में भी इस तरह से समझदार है
जन्म-जन्म साथ निभाने का विचार है

तक़रार में भी प्यार इतना होशियार है
ख़िज़ा के मौसम में सावन की बहार है

तक़रार में सावन के सोलह सोमवार है
वादे इरादों में करवा चौथ का त्यौहार है

तक़रार में भी इस तरह से ज़वाबदार है
जज़्बात की ज़रूरत पे ऐसा अधिकार है

तक़रार में भी इस तरह से वफ़ादार है
'साथी' इस तरह जीने-मरने को तैयार है।

---

1. तकरार=लड़ाई झगड़ा **2.** ख़िज़ा=पतझड़।

तक़रार में प्यार : दो

तक़रार में भी इस तरह की तक़रार है
बबूल के काँटों से गुलों का क़रार है

गिले और शिक़ायत में ऐसा क़रार है
शादी के 'कार्ड' में बच्चों की मनुहार है

तक़रार में भी इस तरह का ऐतबार है
सुहाग की सेज पे गुलों का शृंगार है

सुबूत और गवाह भी जब शर्मसार है
बेगुनाह भी इस तरह से गुनाहगार है

तक़रार[1] में भी इस तरह से हक़दार है
तक़रार में भी मुहब्बत का तलबगार[2] है

तक़रार में भी इस तरह से ईमानदार हैं
पल-पल भूख व प्यास का समाचार है

तक़रार भी तो ऐसे बेमानी औ बेकार है
'साथी' जब से प्यार ईश्वर का अवतार है।

---

1. तकरार=लड़ाई झगड़ा **2.** तलबगार=इच्छुक।

प्यार में

जो हवा और पानी हो जाता है
रिश्ते में ज़िंदगानी हो जाता है

महबूब मरकर भी तो नहीं मरता
ज़िन्दगी में कहानी हो जाता है

साँसों में दिली धड़कन बनकर
दिलों की ज़ुबानी हो जाता है

ख़ुद अपने आपको तबाह कर
मुहब्बत में दीवानी हो जाता है

रिवाज़ों के बन्धन को तोड़कर
ज़माने में नादानी हो जाता है

रातों का हसीन ख़्वाब बन कर
अल-सुबह[1] सुहानी हो जाता है

प्यार ही जब सब कुछ हो जाये
यह संसार बेमानी[2] हो जाता है

रोम-रोम का अहसास होकर ही
रग-रग की रवानी हो जाता है

प्यार ही ज़िन्दगी व मौत 'साथी'
अपने आप कुर्बानी हो जाता है।

---

1. अलसुबह=प्रात: काल 2. बेमानी=अर्थहीन

मुहब्बत का सिला

मेरी बदहाल तबाही मेरा इन्तज़ार कर रही है
मुहब्बत दिल से ताउम्र का क़रार कर रही है

दोज़ख[1] के लिए ज़िन्दगी इसरार[2] कर रही है
जन्नत के लिए मौत मुझे बेक़रार कर रही है

अब ख़ुदकुशी ही मेरे सवालों का जवाब होगी
ज़िंदगी फिर भी जीने को लाचार कर रही है

शमा रोशन तो फिर परवाना ज़रूर जलता है
इंसानियत इस तरह से ईमानदार कर रही है

गिले औ शिक़वे, शक़ और शिक़ायतों की बातें
हसीन मुलाक़ात को बेरहम बेज़ार[3] कर रही है

रिश्ते कच्चे धागे के बन्धन में हमेशा निभते हैं
बेरुख़ी से दिली रिश्तों को मज़ार कर रही है

सोच समझकर भी नासमझ बन रहा है 'साथी'
दिले-मजबूरी मुझे ऐसा समझदार कर रही है।

---

1. दोज़ख=नर्क 2. इसरार=आग्रह 3. बेज़ार=उदास।

दिल से प्यार

जब जुबान बेजुबान है व निग़ाहे जुबान है
बहुत कुछ दफ़्न बेबस दिल के अरमान है

दिल को अगर किसी के दिल से प्यार है
लाचारी और मज़बूरी प्यार की दास्तान है

उफनती हुई दरिया और समन्दर बेताब है
चाहत व क़शिश दोनों दिलों में जवान है

आख़री ख़्वाहिश में सिर्फ़ व सिर्फ़ प्यार है
दो दिलों में प्यार ही दिल का अरमान है

ज़ियारत और इबादत[1] में प्यार ही प्यार है
दिल व दिमाग़ में प्यार दीन औ ईमान है

रस्मों और रिवाज़ों के बन्धनों में बन्ध कर
प्यार दिल के मकान में हसीन मेहमान है

जब प्यार बिना ज़िन्दा रहना नामुक़िन है
प्यार दो दिल में हवा–पानी के समान है

अमावस की रातें हैं तो क्या हुआ 'साथी'
चाँदनी का चाँद के दिल में तो मुकाम है।

---

1. जियारत और इबादत=तीर्थ यात्रा और प्रार्थना।

फिर कुछ भी नहीं

कायनात में फिर कोई मज़ार इतनी मज़बूत नहीं है
प्यार के अहसास दफ़्न हो जाये ऐसा ताबूत नहीं है

ख़ामोश निगाहों से ही जब सब कुछ बयान हो जाये
बेक़रार मुलाक़ात में फिर गुफ़्तगू[1] कोई सबूत नहीं है

हर वक़्त ख़्वाबों औ ख़यालों में तसव्वुर[2] मुलाक़ात के
जज़्बाते तहरीर[3] के लिए फिर तो कोई ख़तूत[4] नहीं है

दो रूह का मिलन है इश्क़ जुदा होना नामुमक़िन है
रूह को मार सके अब तक ऐसी कोई बंदूक नहीं है

बेख़बर होकर ख़बरदार है जो महबूब के ख़यालों से
कायनात में फिर उसको कुछ भी तो मालूम नहीं है

ऐसे प्यार की कोई भी अहमीयत और वजूद नहीं है
महबूब के गले में मंगलसूत्र व माँग में सिंदूर नहीं है

तन को तो खिलौना बनाना मुमक़िन हो जायेगा 'साथी'
दिल व दिमाग़ क़ैद हो जाये ऐसा कोई क़ानून नहीं है।

---

1. गुफ़्तगू=बातचीत **2.** तसव्वुर=सोच **3.** तहरीर=लिखावट **4.** ख़तूत=पत्र।

कुछ भी नहीं

तन तो है लेकिन मन में मौजूद नहीं है
ऐसे रिश्ते का फिर कोई वज़ूद नहीं है

दिलो-दिमाग़ में नहीं रहता है हर वक़्त
ऐसा प्यार फिर मंज़िले-मकसूद नहीं है

हर पल रहता है अंग-अंग व रोम-रोम में
ऐसे प्यार की फिर कोई जुस्तजू नहीं है

तन औ मन से प्यार के निशान मिटा दे
कायनात में ऐसा कोई भी साबुन नहीं है

मुहब्बत एक शजर का फलसफ़ा हो जाये
सूखे जंगल में भी फिर कोई धूप नहीं है

नफ़रत के फूलों से तो जख़्म हो जाते हैं
प्यार का ख़न्ज़र भी दिल में शूल नहीं है

इज़हारे-ताहिर[1] मुहब्बत नाजायज़ ही सही
तन-मन से बेचैन होने पे भी भूल नहीं है

महबूब अकेले ही ख़ुदकुशी कर ले 'साथी'
रगों में दौड़ता हुआ फिर तो ख़ून नहीं है।

---

1. ताहिर=पवित्र

बदहाल मुहब्बत

सारे जहाँ में मशहूर बस यही कहानी है
जाँ हथेली पे दास्ताने-मुहब्बत जुबानी है

माना कि यह सच है कि चाँद में दाग़ है
पूनम की रात में ये कहना तो नादानी है

कुछ पाने के लिये कुछ भी बाक़ी ना रहे
ऐसी अक़्लमंदी फिर कहाँ से सावधानी है

शांत पानी में भी जब क़श्तियाँ डूब जाये
दरिया की रफ़्तार में फिर कैसी रवानी है

अपने फ़ायदे में ज़माने को ग़लत मानना
ऐसी ग़लतफ़हमी अपने लिये बेईमानी है

बज़्म[1] में चराग़ों की रोशनी को मिटा देना
शमा व परवाने की ये कैसी ज़िन्दगानी है

पूनम की रात में चाँद को ज़लील कर के
चाँदनी ख़ुदकुशी करले क्या ये कुर्बानी है

नामुमक़िन को मुमक़िन समझ लेना 'साथी'
मुहब्बत ज़िंदगी की हकीक़त से बेगानी[2] है।

---

1. बज़्म=महफ़िल **2.** बेगानी=अपरिचित

नासमझ

शुद्ध सोने को पीतल जैसा साबित करना
ऐसे ज़लील हो कर कैसे दिल में बसना

यह कैसी नाइंसाफ़ी चाहत व क़शिश में
अन्धेरी काली रातों में चराग़ों का बुझना

बेइज़्जत व बेआबरू से तार-तार रिश्ता
रोज मरकर आख़िर में फिर कैसा मरना

सुहाग की सेज पे तो काँटें बिछा रखे हैं
फिर क्यों दूल्हा-दुल्हन के जैसा सजना

ज़िन्दगी बेज़ान कन्धों पर लाश की तरह
क़यामत के दिन फिर मौत से क्या डरना

तन-मन की प्यास तो पानी से ही बुझेगी
फिर क्यूँ पानी का बर्फ़ बनकर के जमना

'साथी' ऐसे रिश्तों से क्या हासिल होता है
पूनम की रातों में चराग़ों का कैसा जलना।

दास्ताने-मुहब्बत

सुहानी चाँदनी रातों में बेहिसाब सितारे हैं
महबूब की हसीं यादों के बेशुमार इशारे हैं

अधजगी रातों में विरह की व्याकुल वेदना
बेक़रार होकर तड़पते दोनों दिल बेचारे हैं

ग़मगीन हो कर जुदाई में बहते हुये अश्क़
आँखों में मुलाक़ातों के ख़ूबसूरत नज़ारे हैं

रस्मो रिवाज़ के बंधन में मिलने की चाहत
दरिया के अलग-अलग दो तन्हा किनारे हैं

अपनों की ख़ुशी में बेरहमी से दफ़्न हो गये
प्यार के जो सपने मिल कर हमने संवारे हैं

जन्मों-जन्मों तक एक साथ रहने की तमन्ना
ख़ुदा से दुआओं में बेबस दिल की पुकारे हैं

दो बदन में एक जान है हमारा प्यार 'साथी'
रिवायतों से बेबस होकर दिल के बँटवारे हैं।

1. रिवायत=परम्परा

तासीर[1]-ए-मुहब्बत

दिल की आवाज़ जब जुबान हो जाती है
इज़हारे[2]-मुहब्बत फिर अज़ान[3] हो जाती है

अहसास रहता है महबूब के जज़्बात का
चाहत फिर तो बुलंद ईमान हो जाती है

प्यार साधना, आराधना व उपासना है तो
चाहत मन मंदिर में भगवान हो जाती है

इश्क़ गिले शिक़वे, शक़ औ शिक़ायतों से
ज़िंदा मुहब्बत फिर शमशान हो जाती है

घर परिवार की ज़रूरत औ अहसास से
चाहत दिल में हसीं अरमान हो जाती है

'साथी' चाहत तन में नहीं मन में होती है
मुहब्बत बुजुर्गों में भी परवान हो जाती है।

---

1. तासीर=असर **2.** इज़हार=प्रकट करना
3. अज़ान=प्रार्थना की सूचना।

विरह की वेदना

दिल में चाहत और क़शिश जब परवान हो जाये
दिल में प्यार के सागर का फिर उफान हो जाये

रोम-रोम में जब चलती है विरह वेदना की लहरें
अंग-अंग के दरिया में फिर प्यार तूफ़ान हो जाये

जुदाई के सागर से साहिल[1] पर आती हैं क़श्तियाँ
मधुर मिलन की मुलाक़ातें हसीन जहान हो जाये

तन औ मन में जब हिलोरें लेता है प्रेम का सागर
प्रेम का प्याला पी कर मीरा का अरमान हो जाये

ख़ामोश निग़ाहों में बेबसी और बेचैनी के ऐसे दौर
आँखों के बेजुबान इशारे तीर औ कमान हो जाये

तन्हाई में आँखों से बहता हुआ अश्क़ों का झरना
दिल-दिमाग़ में बेख़ुदी ख़तरे का निशान हो जाये

रस्मो-रिवाज़ों के बन्धन में जलता हुआ तन-मन
तड़प-तड़प कर मज़बूरियों का शमशान हो जाये

यादों के समन्दर में साथ गुज़रे वक़्त का अहसास
तहरीरे[2]-'साथी' से प्रेम का मुक़म्मिल[3] दीवान[4] हो जाये।

---

1. साहिल=किनारा **2.** तहरीर=लिखावट **3.** मुक़म्मिल=सम्पूर्ण **4.** दीवान=काव्य-संग्रह

पानी जैसा प्यार

हमारी मुहब्बत निर्मल हो कर पानी हो जाये
प्रेम मासूम बचपन सा गुड़ व धानी हो जाये

पानी से बादल और बादल से पानी हो कर
पानी सा प्यार बनकर अमर कहानी हो जाये

सावन की हरियाली और बसन्त की फुलवारी
प्यार की बारिश से कायनात सुहानी हो जाये

वक़्त पर दो बून्द पानी भी अमृत से बेहतर है
प्यासे की प्यास बुझाकर प्रेम इन्सानी हो जाये

नेकी कर दरिया में डालना ही सवाब होता है
मुहब्बत की ज़िंदगी दरिया की रवानी हो जाये

डूबते हुये को तिनके का सहारा काफ़ी होता है
प्यार के दो बोल हमदर्दी की निशानी हो जाये

पानी–ज़मीन से थोड़े के बदले बहुत कुछ देकर
शजर के फलसफ़े जैसी मुहब्बत दानी हो जाये

आँखों से बहते हुये अश्क़ महज़ पानी तो नहीं
बेबसी, जुदाई में सच्चे प्रेम की ज़ुबानी हो जाये

बिना पानी के ज़िन्दा रहना नामुमक़िन है 'साथी'
प्यार में पानी के तासीर से ज़िन्दगानी हो जाये।

मुहब्बत ही ज़िन्दगी

जिसके बिना ज़िन्दा रहना मुश्क़िल वही तो धड़कन है
ऐसे अहसास और जज़्बात से ही मुहब्बत का मन्थन है

मुहब्बत दीन औ ईमान है कोई तिज़ारत[1] औ सौदा नहीं
प्रेम में कुछ पाने का ख़याल भी ख़ुदग़र्ज़ी का चिंतन है

वैसे तो चुटकी भर सिन्दूर का कोई ख़ास मोल नहीं है
मगर सुहागनों के लिये तमाम उम्र ऐतबार[2] का बन्धन है

हर पल में महसूस करो तो कुछ भी नामुमक़िन नहीं है
दूर रह कर भी रूह के मिलन से सब कुछ मुमक़िन है

मुश्क़िल ही नहीं जो नामुमक़िन है उसे मुमक़िन करना
ज़िन्दगी में ऐसी दीवानगी कामयाब जीवन का मनन है

चाहत-क़शिश में ज़िंदगी व मौत की परवाह किये बिना
बेक़रार होकर परवाने का जलती हुई शमा से मिलन है

विरह की वेदना से बेचैनियों में इतना मज़बूर हो जाना
मुलाक़ात के वक़्त जैसे दो दीवाने दो जाँ एक बदन है

मालूम है कि सब कुछ मेरा ही है मुझे ही मिलेगा 'साथी'
प्यार पाने के लिये लड़ना-झगड़ना फिर कैसे अनबन है।

---

1. तिजारत=व्यापार **2.** ऐतबार=विश्वास।

ख़ूबसूरत अहसास

चाहत व क़शिश हमारे प्यार के रिश्ते में जितना है
हमारा वजूद सिर्फ़ और सिर्फ़ एक दूजे में इतना है

ज़िन्दगी में हसीन व ख़ूबसूरत वक़्त सिर्फ़ उतना है
मधुर मिलन की मुलाक़ातों में जिस वक़्त मिलना है

ता-उम्र के लिये यादों का हमारे दिलों में बसना है
एक-दूजे के ख़्वाबों-ख़यालों में वक़्त का गुज़रना है

जो कुछ भी तुम्हारे दिल में है वो ही मेरा सपना है
ऐसे ऐतबार से ही हमारा दिल औ दिमाग़ अपना है

ख़ूबसूरत गुलों[1] की ख़ुश्बू से गुलशन का महकना है
ऐसे अहसास औ जज़्बात से एक-दूजे का रहना है

दरिया और समंदर को मिल कर पानी ही बनना है
हमारे दो बदन में भी ऐसी एक जान का ही बसना है

सोने को अनमोल कुन्दन होने के लिये तो तपना है
हमारी उल्फ़त[2] के जज़्बात को ऐसे ही तो सजना है

पानी का बादल बनके फिर पानी बनकर बरसना है
हमें एक दूजे के साथ ऐसे ही 'साथी' बनकर चलना है।

---

1. गुल=फूल 2. उल्फ़त=मुहब्बत।

एक-दूजे के लिये

चाहत और क़शिश ने प्रेम की मधुर धुन बजाई है
मज़बूर होकर एक-दूजे ने दिल की बात बताई है

बेबस व बेचैन होकर जबसे आँखें हमने मिलाई हैं
अधजगी औ बेक़रार रातें ही इन्तज़ार में बिताई हैं

अब तो महकेगा हमारे पावन प्यार का आशियाना
हमेशा के लिये हमने अब तो राग प्रीत की गाई है

बहुत समझाया हमने विचलित व व्याकुल मन को
बेबस होकर एक-दूजे ने विरह की वेदना सुनाई है

एक-दूजे ने बहुत पी लिये अब तक विष के प्याले
अब तो अमृत जैसे सुहाने सावन की बेला आई है

बेक़रार तन को प्यार के गहरे सागर में नहलाकर
निर्मल और पवित्र, तन और मन की प्यास बुझाई है

एक-दूजे के जज़्बात वादे इरादे इतने पुख़्ता है कि
क़यामत[1] भी अब हमारे जोश व जुनून से घबराई है

हमारे प्यार में अब कोई भी बंधन नहीं रहेगा 'साथी'
मुहब्बत की क़श्ती विशाल गहरे सागर में चलाई है।

---

1. क़यामत=आख़िरी दिन

मुहब्बत का नज़रिया

माना कि समन्दर में पानी जितना बेशुमार प्यार है
मगर समंदर की सरहद का भी तो एक आकार है

किसी भी हाल में हद से गुज़रजाना तो ठीक नहीं
पानी ज़िंदगी है मगर तूफ़ाँ का पानी विनाशकार है

चाहत से दिल में रहते हसीं और ख़ूबसूरत अहसास
मगर नादानी व दीवानगी से तो मुहब्बत शर्मसार है

बबूल के नुकीले शूल तो नहीं है मुहब्बत का सफ़र
मुहब्बत आम व बरगद के शजर का एक विचार है

चाँद व सूरज औ हवा व पानी की तरह बनकर ही
दिल व दिमाग़ में मुहब्बत ज़िम्मेदार औ वफ़ादार है

महकता ख़ूबसूरत गुलशन सब को अज़ीज़ होता है
ऐसे हसीं अहसास व जज़्बात से प्यार ख़ुशगवार है

जो काम दवा से नहीं मगर दुआओं से हो जाते हैं
मुहब्बत में इबादत की तरह असर और चमत्कार है

ज़बरदस्ती तो हैवानों व शैतानों का नज़रिया 'साथी'
इन्सानियत औ शराफ़त से मुहब्बत सुन्दर संसार है।

---

1. सरहद=सीमा **2.** शूल=काँटें **3.** शजर=पेड़ **4.** ईबादत=प्रार्थना।

जाँ निसार मुहब्बत

रिश्तों की दुहाई में बादल ख़त्म हो कर पानी हो गया है
ख़ुद प्यासा था मगर रिश्ते के लिये ज़िंदगानी हो गया है

अपने क़ुदरती हक़ और इन्साफ़ को मेरे हक़ में मिलाकर
नाइन्साफ़ी बर्दाश्त कर तन-मन का भी दानी हो गया है

जायज़ औ मुमक़िन को नाजायज़ औ नामुमक़िन मान कर
अपनी ख़ुशियाँ दफ़्न कर दानिश और इन्सानी हो गया है

पाक़ औ ताहिर[1] रूह बने बगैर ख़ुदा से मिलना नामुमक़िन
अपनी रूह को मेरी रूह में मिला कर रूहानी हो गया है

बहुत मुश्क़िल है पूनम की रातों को अमावस्या मान लेना
चौदवीं का चाँद हो कर ज़िन्दगानी में सुहानी हो गया है

जो चार दिन साथ में गुज़रे उनको ही ज़िन्दगी मान कर
मौत को गले लगा कर दिल में ज़िंदा कहानी हो गया है

मेरी हिफाज़त में ये लिखकर कि मैं मज़बूर औ बेकसूर हूँ
मेरे ख़ातिर इस आख़िरी ख़्वाहिश से वह बयानी हो गया

रस्मो-रिवाज़ों के नूर[2] से दिन में यह मुमक़िन न हो सका
ख़्वाबों और ख़यालों में 'साथी' महकती रातरानी हो गया है।

---

1. ताहीर = निर्मल **2.** नूर = प्रकाश।

ख़ुशहाल मुहब्बत

तन से नहीं मन से मन के मिलन करो
मुहब्बत का इस अहसास से मनन करो

दूरियाँ बेमानी[1] हो जाती है मुलाक़ातों में
हरपल हसीन अहसास का चिन्तन करो

जन्नत के हसीं नज़ारे नसीब हो जायेंगे
निर्मल-पवित्र मन से बाँहो में गमन करो

आशियाँ ख़ुशियों से रोज महकता रहेगा
एक दूसरे के जज़्बात मन से नमन करो

वफ़ा औ ऐतबार से दामन आबाद रहेगा
एक दूसरे के ख़्वाब दिलों से नयन करो

प्यार जन्मों-जन्मों तक अमर हो जायेगा
एक-दूजे को कच्चे धागे का बन्धन करो

ख़ुशी से 'साथी' सब कुछ निसार[2] कर देगा
सुहाग की सेज पर सिंदूर से शयन करो।

---

1. बेमानी=अर्थहीन **2.** निसार=कुर्बान

मयार-ए-मुहब्बत : एक

मुहब्बत में ख़ामोश मुलाक़ात जब बेज़ुबान है
यक़ीनन मयार-ए-मुहब्बत[1] रूह पे परवान है

कैसी ख़्वाहिशें और तमन्नायें रहें ज़िन्दगी से
जब मुहब्बत ही सिर्फ़ ज़िन्दगी का अरमान है

कुछ खोने और पाने का हमें क्या ग़म करना
ज़ीस्त का सरमाया[2] जब प्यार का आसमान है

कौन से रस्मो-रिवाज़ और कौनसी समझदारी
मुहब्बत की दीवानगी में तो ये दिल नादान है

ज़ीस्त[3] में कुछ भी नाजायज़ व नामुमकिन नहीं
मुहब्बत जब ज़िन्दगी व मौत के लिये ईमान है

कैसे रन्ज़ो-ग़म और कैसी मजबूरी औ लाचारी
दो रूह के मिलन ख़ुदा से मिलने के समान है

'साथी' रहस्य और रोमांच के बिना क्या जीना है
उल्फ़त[4] में दीवानगी की ही ज़माने में पहचान है।

---

1. मयार-ए-मुहब्बत=मुहब्बत का स्तर **2.** सरमाया=जमा पूँजी
3. ज़ीस्त=ज़िन्दगी **4.** उल्फ़त=मुहब्बत।

मयार-ए-मुहब्बत : दो

वफ़ा और ऐतबार से महकता हुआ मकान है
मुहब्बत दिल में चैन व सुक़ून का अरमान है

ज़ुल्मो-सितम और ज़बरदस्ती से नफ़रत होगी
मुहब्बत से जो दिल को जीते वही सुल्तान है

कहाँ की जियारत और किसकी इबादत करनी
मुहब्बत तो मक्का व मदीना और गंगा स्नान है

सावन और बसंत में ख़ूबसूरत औ हसीन मौसम
मुहब्बत सतरंगी फूलों औ ख़ुश्बुओं का जहान है

दौलत व ताक़त से कुछ भी हासिल नहीं होता
प्यार में हैवान औ शैतान भी तो फिर इंसान है

प्यार नफ़ा-नुकसान में तिज़ारत के सामान नहीं
प्रेम परमानंद है और प्रेम करने वाला धनवान है

ज़िन्दगी में यह कोई मामूली वाक़या नहीं 'साथी'
मुहब्बत तो ख़ुदा की ख़ुदाई औ पाक़ वरदान है।

कोई तो हो

कम से कम ऐसा कोई तो हो
आँसू बहाने वाला कोई तो हो

प्यार की दास्तान कोई तो हो
जीने का मक़सद कोई तो हो

सिर्फ़ दिल ही तो काफ़ी नहीं
दिल की धड़कन कोई तो हो

लाचार औ बेक़रार है मुहब्बत
मंजिले हम सफ़र कोई तो हो

अज़ीज़ उसे महकता गुलशन
चमन का बागवाँ कोई तो हो

यक़ीनन ख़ुदकुशी ज़रुर होगी
ख़्वाबों की ताबीर कोई तो हो

तूफ़ान में है मुहब्बत की कश्ती
दरिया के साहिल कोई तो हो

जब इश्क़ करना गुनाह है तो
गुनाहगार साबित कोई तो हो

दिल औ दिमाग़ ज़ख़्मी है तो
मासूम सा क़ातिल कोई तो हो

इज़हार व इक़रार क्यूँ ज़रूरी
इशारों की समझ कोई तो हो

प्यार अजर–अमर रहेगा 'साथी'
हीर व रांझा जैसा कोई तो हो।

---

1. ख़्वाबों की ताबीर=स्वप्न फल
2. साहिल=किनारा।

मुहब्बत के अरमान

अपनी जान की कुर्बानी ही ज़मानत है
उसके लिये मुहब्ब्त ऐसी ही अमानत है

प्यार को महफूज़ रखने का ऐसा जुनून
अपना सब तबाह करके भी हिफ़ाज़त है

उसका नाजायज़ को जायज़ मान लेना
मुहब्बत पर ऐसी ही ख़ुदग़र्ज़ इनायत[1] है

कुछ भी लेना नहीं फ़क़त[2] देना ही देना
मुहब्बत पे शजर के जितनी शराफ़त है

दगा, ज़फ़ा व बेईमानी भी उसको मन्ज़ूर
प्यार उसकी नज़र में ईमाँ व इबादत[3] है

रिश्ते नाते कोई भी अज़ीज़ नहीं उसको
मुहब्बत में सारे ज़माने से भी अदावत[4] है

तसव्वुर जब भी मुहब्बत का आ जाये तो
फिर अपने दिल-दिमाग़ से भी बग़ावत है

ख़्वाहिशें मक्का मदीना व गंगास्नान नहीं
'साथी' का साथ उस के लिये ज़ियारत[5] है।

---

1. इनायत=मेहरबानी **2.** फ़क़त=सिर्फ़ **3.** इबादत=प्रार्थना **4.** अदावत=दुश्मनी **5.** ज़ियारत=तीर्थ यात्रा।

मुहब्बत एक इबादत

प्रेम अग्न में अपना तन-मन तपा रहा है
अपने प्रेम को सोने से कुंदन बना रहा है

जो भी इम्तिहान है वह मन्ज़ूर है उसको
अपनी जान की कुर्बानी तक लगा रहा है

दिन को रात और रात को दिन कह देना
मुहब्बत के लिये ऐसा ऐतबार बता रहा है

जुदाई में आँखों से बहते अश्क़ों का रेला
अपने तन को बर्फ़ की तरह गला रहा है

इस जन्म में न सही अगले जन्म में सही
इस उम्मीद से मौत को गले लगा रहा है

मुहब्बत के चराग़ों को दिल में रोशन कर
ज़माने की ज़फ़ा को प्यार में जला रहा है

तन्हाई में मधुर मिलन का हसीन अहसास
अपने दिल को यादों के नग्में सुना रहा है

रस्मों और रिवाज़ों से बेहद मज़बूर होकर
महबूब को ख़्वाब व ख़याल में बुला रहा है

वह सुबह कभी न कभी तो आयेगी 'साथी'
इस इंतज़ार में अपने प्रेम को जगा रहा है।

प्यार का असर : एक

मुहब्बत के लिये दिल में ऐसा सवाल है
बिना महबूब के यह ज़िन्दगी बदहाल है

दिल में करवा चौथ के त्यौहार के बिना
सुहागन को सोलह शृंगार का मलाल है

दिलो-दिमाग़ में वफ़ा और ऐतबार है तो
सहरा[1] में फिर तो मधुमास के ख़याल है

पूनम की चाँदनी में अमावस जैसे हालात
माहताब[2] ज़माने की जफ़ाओं से बेहाल है

दीदार से एक दूसरे के चेहरे पर रौनक
मुहब्बत में ऐसा हसीन निर्मल ज़माल[3] है

सात समन्दर पार से भी अहसासे महबूब
रूह से रूह के मिलन में ऐसा कमाल है

कोई कितना भी अमीर क्यों न हो जाये
बिना 'साथी' ज़िन्दगी का सफ़र कंगाल है।

---

1. सहरा=रेगिस्तान **2.** माहताब=चाँद **3.** ज़माल=सौन्दर्य

प्यार का असर : दो

सात समंदर पार महबूब मिलन में है
प्रेम का पंछी उसके तन व मन में है

दामन महकते प्यार से गुलशन में है
सतरंगी बसंत के मौसम जीवन में है

एक-दूजे का शुक्रिया अदा कर देना
मन में मुहब्बत का मयार[1] नमन में है

एक-दूजे के अहसास में तीज-त्यौहार
प्यार घर और परिवार के बन्धन में है

प्यार के वादे, कस्में और रस्में निभाना
अहसास में हर पल प्यार चिन्तन में है

हर पल ज़हन में ज़रूरत के जज़्बात
ज़िम्मेदारी बनकर प्रेम ही मंथन में है

माँग में सिन्दूर और गले में मंगलसूत्र
सुहाग की सेज पे महबूब शयन में है

रूह का रूह से मिलन हो कर 'साथी'
मुहब्बत आसमान होने के जतन में है।

---

1. मयार=उच्च स्तर

मुहब्बत का ज़ुनून

अपने तन-मन पर उसको इतना ऐतबार है
मैं बेवफ़ा हूँ फिर भी उसको मुझसे प्यार है

मालूम है कि यह हर हाल में मुमक़िन नहीं
मधुर मिलन के लिये फिर भी तो बेक़रार है

इस जनम में ना सही अगले जनम में सही
मुहब्बत के रिश्ते में इस तरह से इंतज़ार है

मुहब्बत के लिये इस तरह बेताबी औ जुनून
जान कुर्बान करने के लिये भी तो तैयार है

प्यार में नाजायज़ को भी जायज़ मान लेना
वो ऐसी दीवानगी में भी तो नहीं शर्मसार है

ज़ालिम ज़माने के जुल्म व सितम के जलवे
मुहब्बत के लिये अदावत[1] करने का करार है

तन-मन और रोम-रोम में ऐसा ही अहसास
प्यार ही उसके जीवन का सम्पूर्ण संसार है

मुहब्बत को आराधना और उपासना मानकर
महबूब ही उसके लिये ईश्वर का अवतार है

तीज और त्यौहार में इस तरह की ख़्वाहिशें
'साथी' ही उसके लिये तो घर औ परिवार है।

---

1. अदावत=दुश्मनी

इश्क़ में क्या हो जाते हैं

जब भी दूर, वह मेरी नज़र से हो जाते हैं
ख़ुद अपने आप में बेख़बर से हो जाते हैं

गुफ़्तगू के वक़्त बादे-सहर[1] से हो जाते हैं
जुदाई के लम्हें, मेरे ख़न्ज़र से हो जाते हैं

बेवफ़ा हो जाने के उनके वादे और इरादे
मेरे वास्ते सहरा[2] के शजर से हो जाते हैं

तन्हा वक़्त को तो गुज़ारना बेहद मुश्क़िल
ग़मगीन ख़यालात शमशीर[3] से हो जाते हैं

बताकर अपनी मज़बूरियाँ और लाचारियाँ
किस तरह से वह बेक़ुसूर से हो जाते हैं

मेरी कमज़ोरियों को अपना हुनर बताकर
ख़ुद अपने आप में मगरूर से हो जाते हैं

बिना उनके एक पल भी तो जीना मुश्क़िल
ज़िंदा रहना ग़म के तसव्वुर से हो जाते हैं

तबस्सुम उसकी बादे-नसीम जैसी है 'साथी'
नाराज़गी में फिर वह ज़हर से हो जाते हैं।

---

1. बादे-सहर=सुबह की शीतल हवा 2. सहरा=रेगिस्तान 3. शमशीर=तलवार 4. बादे-नसीम=शीतल हवा

बदनसीब मुहब्बत

जिनको नहीं होता है महबूब पर ऐतबार
उन के दिलों में गिले-शिक़वे की कतार

ज़िन्दगी में मुहब्बत का ऐसा होता संसार
ग़रीब के ख़्वाबों में जैसे घर औ परिवार

प्यार ख़ुशियों से ऐसे वंचित और लाचार
जैसे मृग कस्तूरी के लिए रहता बेक़रार

दर-दर भटकता है सच्चे प्यार को प्यार
ज़माने में आबाद हैं झूठे इश्क़ के बाज़ार

पूनम की चाँदनी रातों में घनघोर अन्धेरा
क्या कोई इतना ज़्यादा हो जाता लाचार

बर्फ़ पिघलकर प्यास को बुझा तो रही है
फिर पानी किस तरह हो जाता क़ुसूरवार

आग शर्मसार होकर पानी-पानी हो जाये
बेगुनाह फिर हो जाता है संगीन गुनहगार

मुहब्बत के बिना ज़िन्दा रहना नामुमक़िन
और पानी में होता है मछली का शिकार

समन्दर दो बून्द पानी के लिए तरसता है
'साथी' ऐसी हकीक़त रोज होती है साकार।

सिर्फ़ और सिर्फ़

सिर्फ़ इतनी सी ही तो उसके दिल की नज़र है
उसे सिर्फ़ और सिर्फ़ प्यार की ही तो ख़बर है

वो इस उम्मीद और ऐतबार से जान दे रहा है
सिर्फ़ औ सिर्फ़ प्यार ही तो अजर और अमर है

ख़ुश होकर पी रहा है हर रोज़ प्रेम का प्याला
जबकि उसको ये मालूम है कि यह तो ज़हर है

बेख़ुदी का ऐसा आलम और बेहिसाब दीवानगी
जैसे प्रेम का साया उस पर जादू और मन्तर है

मुहब्बत उसके लिये जंग के मैदान से कम नहीं
उसके हाथों में हर वक़्त तलवार और ख़न्ज़र है

हरियाला सावन और सतरंगी बसन्त भी बेकार
सिर्फ़ औ सिर्फ़ प्यार ही हसीन जन्नते-मन्ज़र है

ख़ुदा की इबादत व जियारत भी फ़ानी है उसे
मुहब्ब्त का वाईज़ ही तो उसके लिये रहबर है

इस तरह गिरफ़्त में है मुहब्बत की मदहोशी में
मुहब्बत में ख़ुद अपने आप के लिये जलन्धर है

सिक़न्दर से उसे क्या लेना और देना है 'साथी'
वह सिर्फ़ व सिर्फ़ प्यार में ही मस्त कलन्दर है।

---

1. बेख़ुदी=अपने आपसे बेख़बर **2.** आलम=स्थिती
3. फ़ानी=व्यर्थ **4.** वाईज़=धर्म उपदेशक **5.** रहबर=मार्ग दर्शक
6. जलन्धर=अपने आपको भस्म कर देने वाला राक्षस।

मुहब्बत के दीनो-ईमान

दुनियादारी का उसे सिर्फ़ इतना सा ही ज्ञान है
प्यार ही तो ख़ुशहाल जीवन के लिये विज्ञान है

मुहब्बत के मान औ सम्मान में ऐसा अभिमान है
रस्मों और रिवाज़ों का भी तो फिर बलिदान है

इस तरह से हर पल जीता है अपनी मुहब्बत को
प्रेम ही उसके लिये गीता के कर्म का विधान है

प्यार पर इतना ग़रूर[1] औ इतना मग़रूर[2] है वह
जैसे हरहाल में उसे कामयाबी का इत्मीनान[3] है

मुहब्बत में नाजायज़ को भी जायज़ समझ लेना
ऐसी वफ़ादारी और ख़ुद्दारी से वह बेईमान है

उसकी ज़िंदगी का तो सिर्फ़ एक ही मक़सद है
सिर्फ़ प्यार ही ज़िंदगी औ मौत का इम्तिहान[4] है

अहसास औ जज़्बात में ऐसा जोशो-जुनून 'साथी'
प्यार में अमर होने के लिये हमेशा जाँ कुर्बान है।

1. ग़रूर=घमण्ड **2.** मग़रूर=मस्तमौला **3.** इत्मीनान=विश्वास **4.** इम्तिहान=परीक्षा।

क्या से क्या हो गये

आप से तुम और तुम से तू के हमारे सम्बोधन हो गये
चाहत औ क़शिश में हमारे प्यार के अभिवादन हो गये

एक दूजे के बिना जीना मुश्क़िल ही नहीं नामुमक़िन है
दिल औ दिमाग़ में प्यार के ऐसे बेबस चिन्तन हो गये

जीना और मरना है तो एक दूजे के हसीन अहसास में
ज़िंदगी और मौत के हमारे प्यार में ऐसे मन्थन हो गये

आशियाना ख़ुशियों से हमेशा आबाद औ महकता रहेगा
रोम-रोम के अहसास मुहब्बत में महकते चन्दन हो गये

सोना आग में तपकर ही तो बेशक़ीमती गहना बनता है
वफ़ा और ऐतबार से हमारे तन और मन कुन्दन हो गये

दिलक़श मुहब्बत के अफ़साने, नग्में, तराने, गीत औ ग़ज़लें
मन की वीणा में सात सुरों के संगम से गुन्जन हो गये

निर्मल और पवित्र तन और मन के जज़्बात व ख़यालात
प्यार की आराधना में एक दूसरे के लिये वन्धन हो गये

होली, दिवाली, सावन की तीज व करवा चौथ के त्यौहार
प्यार के अहसास में घर औ परिवार के समर्थन हो गये

हवा-पानी के बिना किसी भी तरह जीवन मुमकिन नहीं
प्यास और साँस बनकर हम एक-दूजे के बन्धन हो गये

मन की मुरादें, दिली तमन्नायें और ख़्वाहिशें बनकर 'साथी'
दिल की दुआओं में एक-दूजे के लिये अभिनन्दन हो गये।

क्या हो गया है

जो महबूब की निगाहों में गिर गया है
ज़िन्दा होकर भी वह फिर मर गया है

कोई भी बिना चाहत और इन्तज़ार के
बेबस औ बेज़ान होकर ही घर गया है

क़ाबिले-प्यार नहीं मगर बातें प्यार की
महबूब के पैर तले उसका सर गया है

पतझड़ में सावन व बसन्त के अहसास
सूनी माँग में महबूब सिंदूर भर गया है

पूनम की रातों में अमावस जैसे तसव्वुर
बेगुनाह माहताब बादलों से डर गया है

रेगिस्तान में प्यासे को पानी की चाहत
बेताब मिलन में महबूब चश्मतर[1] गया है

सिर्फ़ वादे हैं सच के इरादे नहीं 'साथी'
महबूब दिल व दिमाग़ से उतर गया है।

1. चश्मतर=नम आँखों से

क्यों हो गया है

दिल में साँसे व धड़कन बनकर गया है
ज़िन्दगी व मौत के जैसा असर गया है

प्यार को जिया है ज़िन्दा दिल बन कर
बेमौत मरकर ज़िंदगी से बेख़बर गया है

बेवक़्त हरे व भरे शजर का सूख जाना
पानी तो सर के ऊपर से गुज़र गया है

बेचैन और बेबस प्यार की बेताबी ख़त्म
बेक़रार दरिया का पानी समंदर गया है

बेक़ुसूर महबूब तौहीन और ज़लालत से
प्यार में नम आँखों से तर-बतर गया है

दिल से मज़बूर हो कर प्यार में दीवाना
सरेआम बेआबरू होकर दरबदर गया है

कलियाँ खिलने से पहले ही मुरझा गई
महबूब अरमानों को कुचल कर गया है

दरिया बिना पानी कैसी दरिया है 'साथी'
बिना मुहब्बत के इन्साँ कैसे तर गया है।

बदहाल प्यार

तौहीन औ ज़लालत से बदनसीब इन्सान हूँ
बिना इज़्जत के जी कर ज़िन्दा शमशान हूँ

मुहब्बत को ख़ुदा की पाक़ ईबादत मानकर
मैं ज़माने की नज़र में हैवान और शैतान हूँ

उसका घर अपना घर समझने का अहसास
मगर उसके दिल में बिन बुलाया मेहमान हूँ

दो वक़्त की रोटी का इंतज़ाम तो मुश्क़िल है
क्या मैं क़ीमती हीरे जवाहरात की खदान हूँ

हवा-पानी के बिना ज़िंदा रहना नामुमक़िन है
प्रेम दीवाना होकर दरिया व शजर नादान हूँ

बदहाल हो कर कौन जीना चाहता है 'साथी'
घुट-घुट कर जीकर ख़ुदकुशी का अरमान हूँ।

बदनसीब मुहब्बत

ज़ालिम दिलों में तो बेशुमार प्रेम वरदान हूँ
मगर महबूब के पैरों तले कुचला अरमान हूँ

नफ़रतों को भी वफ़ाओं के अमृत पिला कर
ज़हर पीने वाला नीलकंठ शंकर भगवान हूँ

प्यार मेरे तन और मन का सम्पूर्ण संसार है
आख़िरी ख़्वाईश में मरते वक़्त ऐसा बयान हूँ

सिर्फ़ प्यार की ग़ज़लें औ अफ़साने लिखकर
बेरहम दिलो–दिमाग़ में भी ज़िन्दा दास्तान हूँ

पल–पल वफ़ाओं के ख़न्ज़र से क़त्ल हो कर
मुहब्बत के लिये मरने वाला दीन व ईमान हूँ

'साथी' दिल में इंसानियत औ प्यार की क़श्ती
उल्टी बहती हुई दरिया में ख़तरे का निशान हूँ।

मुहब्बत ऐसी हो जाये

चाहत और क़शिश में हम ऐसे नादान हो जायें
मुहब्बत के रिश्ते के लिये दीनो–ईमान हो जायें

हम प्यार के अहसास में ऐसे मेजबान हो जायें
एक–दूजे के दिलों में मान से मेहमान हो जायें

बिना मुहब्बत के तो बेकार है हमारी ज़िंदगानी
निर्मल व पवित्र प्यार में हसीन जहान हो जायें

दिल में प्यार को साधना औ प्रार्थना समझकर
एक–दूजे के मन के मंदिर में भगवान हो जायें

एक दूसरे से लड़कर रुसवा[1] होने से तो बेहतर
हम ख़ुद से लड़कर मुहब्बत पे कुर्बान हो जायें

मधुर मिलन की ख़ूबसूरत मुलाक़ातें याद करके
तन औ मन के अहसास से हम जवान हो जायें

हमारे प्यार की ख़ुशहाली औ हिफ़ाज़त के लिये
हमारे वादे और इरादे दिल में संविधान हो जायें

प्यार को अनमोल विरासत और धरोहर मान कर
मुहब्बत में हम दोनों बेशक़ीमती अरमान हो जायें

घर–परिवार की सुख़ और शान्ति के लिये ‘साथी’
हम दोनों के ख़यालात एक ही मतदान हो जायें।

---

1. रुसवा=बदनाम

प्यार ही ज़िन्दगी

दिल की धड़कन बनकर हरे–भरे शजर बन गये हो
तन–मन की प्यास में समंदर की लहर बन गये हो

दीवानगी में बेहिसाब बेख़ुदी का मन्ज़र बन गये हो
राधा–कृष्ण के निर्मल रिश्तों की ख़बर बन गये हो

मंज़िले–मक़सूद की ख़्वाहिशें और तमन्नायें बन कर
ता–उम्र के लिये ज़िंदगी के हम सफ़र बन गये हो

घर और परिवार के अहसास और जज़्बात बन कर
दिन व रात में पल–पल के गुज़र–बसर बन गये हो

तन व मन में सुनहरे सपनों के राज कुमार बनकर
दिल और दिमाग़ में सुहाग का सिन्दूर बन गये हो

बेबस व बेक़रार करवटें बदलती हुई बेचैन रातों में
मधुर मिलन के लिये उम्मीदों के सहर बन गये हो

दिल में हसीन जन्नत के ख़्वाब औ ख़याल बनकर
मेरे आशियाने के लिये ख़ूबसूरत शहर बन गये हो

विरह की व्याकुल वेदना में मधुर मिलन की चाहत
बेक़रार इंतज़ार में मुलाक़ात की नज़र बन गये हो

प्रेम रस पी कर कोई भी कैसे मर सकता है 'साथी'
प्रेम की प्यासी मीरा के प्याले में ज़हर बन गये हो।

---

1. मंजिले-मक़सूद=आख़िरी पड़ाव **2.** सहर=सुबह।

नादान मुहब्बत

जिनकी मुहब्बत के रिश्ते में नफ़रत, रंजिश और झगड़ा है
उनकी ज़िंदगी में फिर तो हर वक़्त लफड़ा ही लफड़ा है

हमारे लिये होनी औ अनहोनी में परमात्मा की रज़ामंदी है
वक़्त सबसे ताक़तवर है फिर हम दोनों में कौन तगड़ा है

प्यार सावन और बसन्त के महकते गुलशन की बहार था
बागवान की नादानी से सहरा में ख़िज़ा बनकर उजड़ा है

प्यार नासूर बन कर बह रहा है बर्फ़ जैसा पानी बन कर
मुहब्बत पे गिले शिक़वे व नफ़रत के नमक को छिड़का है

सतरंगी इंद्रधनुष के रंगों का अहसास था ख़ूबसूरत प्यार
नासमझी में बदरंग औ बेमेल रंगों को मिलाकर बिगड़ा है

ख़ूबसूरत व हसीन अहसास और जज़्बात को दफ़्न करके
सितमगर अफ़सोस औ मलाल में ग़मगीन होकर तड़पा है

पूनम की चाँदनी रातों में आबाद था प्यार का आशियाना
चाँद की नादानी से अमावस की काली रात का अंधेरा है

पल-पल के पुख़्ता हिसाब है साथ में गुज़ारे हुये वक़्त का
मगर कहाँ समझा कि वक़्त कितनी मुश्क़िलों से गुज़रा है

मखमल में टाट के पैबन्द से रेशम जैसा नाजुक रिश्ता भी
बदजुबान व शिक़वे से तार-तार होकर फटेहाल कपड़ा है

मासूम बच्चे की तरह से बिलख-बिलख कर रोता है 'साथी'
महबूब से ज़लालत और तौहीन में जुदा हो कर बिछड़ा है।

त्यौहार के अहसास

दिल के जज़्बात से रिश्ते का इज़हार है
जन्म-जन्म में साथ निभाने का क़रार है

परिवार की परेशानी में ऐसा समझदार है
पल-पल में दुख औ सुख का समाचार है

माँग में सिंदूर व मंगलसूत्र का श्रृंगार है
रस्मो-रिवाज़ निभाकर मन से वफ़ादार है

चूड़ियों में खनक व पायल की झंकार है
आँगन हसीन, ख़ूबसूरत और ख़ुशगवार है

आदर-सत्कार की नसीहत में संस्कार है
बड़ों के आशीर्वाद से परिवार में बहार है

माँ की ममता के असर में इतना प्यार है
बच्चों के भोलेपन में पानी की मनुहार है

'साथी' उपवास में तन-मन से ईमानदार है
अहसानमन्द पिया के दिल में सत्कार है

प्यार बन कर

चाहत औ मुहब्बत बन कर मेरे प्यार बने हो
दीन और ईमान बन कर मेरे ऐतबार बने हो

मेरे ख़्वाबों में सपनों के राज कुमार बन कर
तुम मेरे तन व मन के सम्पूर्ण संसार बने हो

हाथों में मेहन्दी और माँग में सिन्दूर बन कर
मेरे दिल में सुहाग का सोलह श्रृंगार बने हो

जुदाई और तन्हाई में एक–एक पल गिनकर
विरह की व्याकुल वेदना का इंतज़ार बने हो

मेरे ख़यालात में मुहब्बत के अल्फ़ाज बन कर
गीत व ग़ज़लों में तरन्नुम की सितार बने हो

हर पल दिल में मधुर यादों के अक़्स बन कर
आशियाने के लिये पायल की झन्कार बने हो

दिल में मधुर मुलाक़ातों के अहसास बन कर
ता–उम्र के लिये तन–मन में यादगार बने हो

तमन्नायें, ख़्वाहिशें, मुरादें व दिली दुआ बन कर
जन्मों–जन्मों के लिये घर और परिवार बने हो

बेक़रार दिल के चैन व सुक़ून बन कर 'साथी'
तन–मन में सावन व बसन्त की बहार बने हो।

ऐसा भी हो सकता है

नामुमक़िन को इस तरह मुमक़िन कर सकता है
बिना प्यार के जी तो नहीं सकता मर सकता है

बिना मुहब्बत के उसकी ज़िन्दगी मौत के समान
फिर वो मुहब्बत में किसी से कैसे डर सकता है

मधुर–मिलन में हज़ारों मीलों की दूरी भी बेमानी[1]
तसव्वुर में ही मिलन को हक़ीक़त कर सकता है

अपने वादों और ईरादों में ऐसे जोश और जुनून
मेरी वक़्ते–मौत भी माँग में सिन्दूर भर सकता है

रस्मों औ रिवाज़ों से मज़बूर है फिर भी प्यार में
ज़माने के सामने सुहागन होकर सँवर सकता है

मुहब्बत का आशियाँ तो मक़तल[2] के उस पार है
और वह जान हथेली पर लेकर गुज़र सकता है

इतना गुरूर और मगरूर है प्यार के अहसास में
बेख़ौफ़ होकर कायनात को ख़बर कर सकता है

उम्मीद और ऐतबार में यादों के चराग़ जला कर
अमावस की रातों में सुहानी सहर[3] कर सकता है

'साथी' चाहत औ क़शिश में इतनी दीवानगी होना
प्यार को मीरा के प्याले का ज़हर कर सकता है।

---

1. बेमानी=अर्थ हीन 2. मक़तल=युद्ध क्षेत्र 3. सहर=सुबह

प्यार ऐसे निभाना है

अपने वादों और ईरादों को इस तरह जताना है
पानी का भाप बनकर फिर पानी को बरसाना है

बिना रोशनी के चराग़ों की कोई अहमीयत नहीं
प्यार में दीया औ बाती बनकर रिश्ता निभाना है

विरह की व्याकुल वेदना में मिलन की ख़्वाहिशें
बेक़रार उफनती दरिया का समंदर में समाना है

ज़िन्दगी की सारी की सारी ज़रूरतें पूरी कर के
शजर का फलसफ़ा[1] बन कर तमाम उम्र बताना है

एक पल की नाराजग़ी भी क़यामत से कम नहीं
बेगुनाह होकर भी गुनहगार बनकर के मनाना है

एक मुद्दत से इन्तज़ार की बेक़रार मुलाक़ात में
बर्फ़ की तरह से गलकर एक-दूजे में मिलाना है

प्यार में रिश्ते का ऐसे चिंतन और मन्थन कर के
प्यार में दूध से दही, छाछ, मक्खन व घी बनाना है

'साथी' सोना तप कर ही अनमोल कुंदन बनता है
वफ़ा औ ऐतबार की अगन में प्यार को तपाना है।

---

1. शजर का फलसफ़ा=पेड़ का चिन्तन

मुहब्बत कमाल करती है

जीवन के तमाम मसलों का समाधान करती है
मुहब्बत सम्पूर्ण संसार बनकर निधान करती है

चाहतों की सतरंगी तितलियाँ उड़ान करती है
मुहब्बत दिल और दिमाग़ को जवान करती है

महकता है तन और मन गुलशन की तरह से
यादों की ख़ुशबू मधुर-मिलन बयान करती है

बेताबी के भँवरों का मुलाक़ात के लिये गुंजन
विरह की व्याकुल वेदना में दास्तान करती है

मन के आशियाँ में हसीं अहसास को मुहब्बत
सावन बसंत की फुलवारी के समान करती है

नाजायज़ को भी हर हाल में जायज़ मानकर
उल्फ़त[1] अक़्लमंद को भी ऐसे नादान करती है

गुलों की रंगत और फ़ितरत बन कर मुहब्बत
दिल व दिमाग़ को ख़ूबसूरत जहान करती है

ख़ुश्बू की तरह से दिल में महक कर मुहब्बत
तन-मन पे ज़हीन[2] व हसीन अहसान करती है

तमाम-उम्र के लिए हसीन यादें और मुलाक़ातें
पत्थर पर तहरीरें[3] 'साथी' जैसा निशान करती है।

---

1. उल्फ़त=मुहब्बत **2.** जहीन=ज्ञानी **3.** तहरीर=लिखावट।

जब ऐसा नहीं है

चाँदनी को जब से चाँद पर ही ऐतबार नहीं है
जीवन में सुहावनी रातों का फिर संसार नहीं है

दरिया की रवानी में तो पानी की रफ़्तार नहीं है
सीने में दिल है मगर उसे दिल से प्यार नहीं है

तन्हा व बेचैन रातों में सूरज का इंतज़ार नहीं है
तन और मन से मधुर मिलन को बेक़रार नहीं है

अन्धेरी रात में उसको उजाले का विचार नहीं है
ख़िज़ा के बाद फिर तो सावन की बहार नहीं है

शजर के चिंतन से जब तक वो ख़बरदार नहीं है
मुहब्बत का यह रिश्ता तब तक समझदार नहीं है

सहरा की तपन, बर्फ की गलन असरदार नहीं है
क़ुदरत के क़हर भी राहे-मुहब्बत लाचार नहीं है

चाहत और क़शिश का कोई भी ज़मींदार नहीं है
प्रेम तो अनमोल 'साथी' कोई भी खरीददार नहीं है।

कैसे प्यार हूँ मैं

दोनों किनारों के बीच तूफ़ानी मझधार हूँ मैं
दरिया की रिवायतों के लिए गुनहगार हूँ मैं

प्यार व इंसानियत दोनों का क़ुसूरवार हूँ मैं
ख़ुदा की नज़र में दोनों का तीमारदार हूँ मैं

जायज़ हक़ की ज़द्दोज़हद व कशमक़श में
जायज़ हो कर भी नाजायज़ अधिकार हूँ मैं

प्यार में इन्सानियत औ इन्सानियत में प्यार
फिर तो दो दिलों के दिल में यादगार हूँ मैं

बेगुनाह को इंसाफ़ नहीं और सज़ा भी नहीं
म्यान के अन्दर बेबस धारदार तलवार हूँ मैं

तबाह कर दूँ अपने महके हुये आशियाने को
क़ुदरत से बेवफ़ाई करके कैसे वफ़ादार हूँ मैं

मुहब्बत जीयेगी तो फिर इंसानियत ही मरेगी
बिना इंसानियत के फिर किसका प्यार हूँ मैं

दरिया के आर भी नहीं और पार भी नहीं हूँ
क़श्ती में सवार होकर भी 'साथी' लाचार हूँ मैं।